जनक आ' अन्यान्य एकांकी



डा० उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

जनक आ' अन्य एकांकी

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड
१६२/ए/१३२; लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता-७०००४५

● प्रथम संस्करण : १९७८ ई०

● रचनाकाल : २ जून, १९७५ ई०

● प्रकाशक :

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड

१६२/ए/१३२, लेक गार्डेन्स,

कलकत्ता-७०० ०४५

● मुद्रक :

सिंह प्रेस

कलकत्ता-७०० ०४५

● मूल्य :

तीन टाका

पात्र-परिचय

जनक—मध्यवयस्क श्रमिक, सम्प्रति बेकार।

कमला—जनक क पत्नी।

कार्त्तिक—जनक क पुत्र।

शान्तिनाथ—मकान-मालिक।

रामू—जनक क गौंआ।

श्रीकान्त—रामू क परिचित व्यक्ति।

नवीन—जनक क पड़ोसी क बालक।

—:◈:—

आलोक-व्यवस्था

(क) पहिल दृश्य—भोर क पहर; समय प्रातः ६; चारू कात सामान क भीड़ क कारणें अपर्याप्त आलोक; त्रिरश्मिपात [थ्री स्कीम लाइटिंग]—एक खिड़की सँ तीव्र सूर्यालोक टांगल कपड़ा-लत्ता कें जेना भेद कए लखा होइत अछि; दोसर, मंचक वाम दिसि भानस करबाक स्थान पर अपर्याप्त आलोक; तेसर, प्रवेश-पथ आ तकर आसपास उज्ज्वल आलोक।

(ख) दोसर दृश्य—बेरिया क पहर; कपड़ा लत्ता चपतबाक बादो आलोक पर्याप्त नहि बुझाइत अछि; द्विरश्मिपात [टू स्कीम लाइटिंग]—एक, खिड़की सँ आबैत अस्तंगत सूर्य क आभास; दोसर, घर क साधारण आलोक।

(ग) तेसर दृश्य—भोर; घटनाकाल ६ बजे सँ ७ बजे धरि; दृश्य क अधिकांश समय मे केवल एकहिटा आलोक-स्रोत [लाइटिंग सोर्स] रहैत अछि, जे समय क संग तीव्रतर होइत अछि— ओ भेल खिड़की सँ आबैत सूर्यालोक। अन्त मे ई आलोक भग्नहृदय जनक क पाछा सँ जरैत-मिझबैत [ऑफ-ऑन] होइत रहैत अछि; एहि समय मे एक घूर्णायमान आलोक क व्यवहार सेहो हैत।

—:ꕥ:—

पहिल दृश्य

[एक निम्नमध्यवित्त व्यक्ति क उजड़ल सन घर मे एकटा खटिया, ताहि पर एकटा बिछौना, टूटा अधटुट्टा कुर्सी, एकटा स्टोव, किछु बर्त्तन आ' भानस क सामान रखबाक एकटा छोट ताखा देखल जाइत अछि। खटियाक ऊपर द' कए एकटा रस्सी टांगल गेल अछि, जाहि पर सँ अधसूखल साड़ी, साया, कुर्त्ता, धोती, गंजी आ' गमछी लटकैत अछि। भानस क ताखा, स्टोव, बर्त्तन आदि मंचक बाम दिसि रहत— दहिना दिसि टूटा टंगटुट्टा कुर्सी।

मंच आलोकित भेलाक बाद एकटा मध्यवयस्का नारी स्टोव पर अधहन चढ़बैत देखल जाइत छथि। अधहन चढ़ा कए ओ किछु काल दुनू हाथ दू दिसि फैला कए पिढ़िया पर बैसल रहैत छथि। तकर बाद ताखा पर सँ चश्मा आ' हनुमान चालीसा उतारि कए पुनः पिढ़िया पर बैसैत हनुमान चालीसा पढ़ै लागैत छथि।

किछु कालक बाद रस्सी पर टांगल धोती आ' साड़ी के पर्दा जकाँ हँटा कए गृहस्वामी खटिया पर सँ उतरलाह। हुनक आँखि मे तखनहु निन्नक चेन्ह लागल रहैत छन्हि। ओ चश्मा के कुर्त्ता सँ साफ करैत आगाँ बढ़ैत छथि।]

जनक—की भोरे-भोर बड़बड़ाइ छी ?

कमला—[उत्तर नहि दैत छथि। एक बेरी जनक क दिसि देखि कए पुनः और जोर सँ हनुमान चालीसा पढ़ै लागैत छथि—]

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर संहारे।
रामचन्द्र के काज संवारे॥...

जनक—[कल जोड़ैत] हे, बस करू। जहिना पढ़ैत छलहुँ, तहिना पढ़ू...!
[जनक क अनुरोध सुनि कमला पुनः स्वर कें मद्धिम क' दैत छथि। एहि बीच जनक हुनक पास आबि कए दू-एकटा बर्त्तन क झँपना हँटाए की सब भानस भेल अछि, से देखैत छथि स्टोव पर चढ़ाओल हँड़िया कें छूबितहि हाथ पाकैत छन्हि आ' ओ शीघ्रता सँ हाथ हँटाए मुँह कें विकृत करैत छथि। घर सँ बाहर जा कए कुल्ला क' कए घुरैत एकटा साड़ी मे मुँह पोछैत छथि। तकर बाद एकटा टुटलका कुर्सी कें टेबैत बहुत साव-धानी सँ बैसि कए कैकटा पुरान पत्रिका क पन्ना उनटाबै लागैत छथि।

कमला हनुमान चालीसा क पाठ समाप्त कए हँड़िया क झँपना हँटा कए देखैत छथि— अधहन खौलि रहल अछि वा नहि। तकर बाद उठि कए जनक क पास जा कए ठाढ़ भ' जाइत छथि।]

कमला—सुनैत छी ?

जनक—[पत्रिका सबटा कें दोसर कुर्सी पर धरैत] की सुनब ?

कमला—और कत्तेक दिन अहिना चलत ?

जनक—माने ?

कमला—एक हप्ता भ' गेल अछि, तरकारी क मुँहो नहि देखलियैक। बस, दालिये-भात चलि रहलैक अछि।

जनक—आब हिनका तरकारी चाहियन्हि ?

कमला—हमरा लेल नहि; अहीं क लेल कहैत छलहुँ।

जनक—हमरा से सब किछु नहि चाही।

कमला—[चुप रहि कए] एना चाओरो-दालि कत्तेक दिन रहत ? सेहो त आब...!

जनक—[उत्तेजित भए] त ई सब हमरा कियैक सुना रहल छी ?

[कमला जवाब नहि दैत छथि। दुनू किछु काल चुप रहैत छथि।]

हम की करब एसगर ? झूठौं हमरा कारखाना सँ छाँटि देलक। हड़ताल-घेराब कैलक आन क्यो आ' सबटा दोष थोपल गेल हमरे माथ पर।

[कमला किछु बिना कहनहि स्टोव लग जा कए हँड़िया मे चाओर ढारि दैत छथि। तावत जनक अशान्त भए पदचारणा करै लागैत छथि।]

अहाँ की बूझैत छी, हम कोसिस नहि करै छी ? भोरे निकलैत छी, से साँझुक पहर हारल-थाकल घुरैत छी। एक बेरि जकरा बदनाम क' कए कोनो मिल-मालिक भगा दैत अछि, तकरा लेल आस-पासक मिल सब मे नौकरी भेटब असम्भवे होइत छैक।

कमला—अहीं क संग त गोपाल कें सेहो नौकरी छोड़ै पड़ल छलैक। ओ धैलक कोनो काम-काज की...?

जनक—काज के देतैक ? सब ठाम त वैह यूनियन आ' पार्टीबाजी चलि रहल अछि। आइ हमहूँ ओकरा सभक संग तोड़फोड़ करितहुँ, बात-बात पर हल्ला करितहुँ— त मालिक हमरा भगा सकितथि थोड़बे ? ने यूनियने-बला सब एना मुँह फेरने रहितै। ओकरा सब कें हम नीक जकाँ चीन्हि गेलियैक। नारा लगबैत काल ओसब कहैत अछि— 'दुनियाक मजदूर एक हो !' लेकिन भीतरे भीतर 'ओकरा मार ! ओ बिहारी थिकौ', 'एकरा भगा ! ई मदरासी थिकौ'— इयैह सब कहैत रहैत अछि।

कमला—जाय दियह से सब बात !

जनक—जाय कोना दियह ? की ई देश हमर नहि थीक ? की माटि पर जातिक नाम लिखल रहैत छैक ?

कमला—एखने ओत्तेक निराश नहि होउ ! [आपन हाथक एकमात्र सोना क कंगन कें देखा कए] ई त अछिये।

जनक—आइ अछि, कालिह नहि रहत। तकर बाद ? [चुप रहि कए] आ' तकर बादे कियैक ? तकर पहिनहि जे हैबाक अछि, से भ' जायत......

कमला—[शंकित भए] की हैत ?

जनक—मकान-मालिक की कहने रहैक, मोन नहि अछि ? आइ चारि मास भ' गेल अछि हुनकर...

शान्तिनाथ—[नेपथ्य सँ] जनक बाबू छी औ ?

जनक—वैह, आबि गेलाह।

कमला—आब ? आब की हैत ? एत्तेक दिन त दुपहरिये कें आबैत छलाह, जखन अहाँ रहैत नहि छलहुँ। मुदा आइ त...

शान्तिनाथ—[नेपथ्य सँ] जनक बाबू !!

जनक—जे हैत, से देखल जायत। [उच्चस्वरें] के छी ? शान्तिनाथ बाबू ? आयल जाय...

शान्तिनाथ—[प्रविष्ट भए] आइ बड़ भाग्य सँ अहाँ भेंटलहुँ।

जनक—नहि, माने... हम त......

शान्तिनाथ—'हम त' की ? अहाँ त जनके चौधरी छी।

जनक—नहि... माने हँ— से त छी।

शान्तिनाथ—सुनू जनक बाबू ! अहाँ कें नीक लोग जानि हम घर किराया पर देने छलहुँ। मुदा अहाँ त मैथिल भ' कए मैथिलेक पाइ मारै चाहैत छी। अही लेल बंगलिया मकान मालिक सब कहने छल— कहियो आपन देशाक लोग कें घर भाड़ा नहि दहक।

जनक—ह-हम त अहाँ कें कहनहि छी जे...

शान्तिनाथ— ...कहने त छी अहाँ बहुत किछु। पहिल मासक भाड़ा जखन नहि देलहुँ, तखन कहने छलहुँ दरमाहा नहि भेंटल। तकर बाद अहाँ क टाका पाकिटमार भ' गेल। दोसर मास मे कहलहुँ नौकरी चलि गेल।

तेसर मास मे कहलहुँ आपन बेटा कें लिखने छी टाका लेल, मनीआर्डर आबितहि हैतैक।

जनक—केवल एहि बेर क लेल अहाँ हमर बात पर विश्वास करू— हम दोसर नौकरी पाबितहि सबटा पाइ चुका देब।

शान्तिनाथ—[जोर-जोर सँ हँसै लागैत छथि] खूब कहलहुँ। अघहन लेल हँड़िया चढ़ा कए चललहुँ बीया रोपै लेल।

जनक—हम स-सत्ते कहैत छी... नौकरी भेंटितहि हम—

शान्तिनाथ— ...सबटा पैसा चुका देब। सैह ने? मुदा ई त अहाँ एमहर कैक मास मे उन्नैस बेरि कहि चुकल छी। ई बीसम बेर भेल।

जनक—श-शान्ति नाथ बाबू! देखू...

शान्तिनाथ—से त देखिये रहल छी। [घर क चारू दिसि देखैत] घर क जेहन हाल अहाँ लोकनि बना देलहुँ अछि जे नवका भड़ैती कें आनबाक पहिने अहू लेल कम पाइ नहि खर्च करै पड़त।

जनक—नवका भड़ैती... माने ?

शान्तिनाथ—माने अहाँ सब कृपा क' कए ई घर खाली क' दियह! हमर जे आर्थिक क्षति भेल, से भेल। मुदा सब दिन एना नहि चलि सकैत अछि।

जनक—हम कहैत छलहुँ...

शान्तिनाथ—कहबाक लेल शब्द क अभाव अछि थोड़बे? मुदा तैं एहि बेरटा ई नहि कहियौक जे हम कोसिस करब...

जनक—हम सत्ते कोसिस करब...

शान्तिनाथ—[आँखि बन्न क' कए] एकैस।

जनक—हम अहाँ सँ कोना कहू जे हम कत्तेक तरहें चेष्टा...

शान्तिनाथ—[टोकैत] बाईस। [आँखि खोलैत] बस! हमर गुरुदेव कहने रहथि— बेटा! बाईस बेरि कोसिस कैलाक बादो जखन कोनो काज नहि होइत छैक, त और कोसिस नहि करबाक चाही। तैं आब अहाँ चेष्टा-तेष्टा बन्द करू!

जनक—मुदा हम सब कतय जायब एहि हाल मे ?

शान्तिनाथ—एत्तेक विशाल शहर पड़ल अछि सामने आ' पूछैत छी कतय जायब ? नहि त आपन बेटा लग चलि जाउ !

जनक—[चौंकैत] बेटा लग ? से कोना हैत ? ओकर एखन आमदे की हैतैक ?

शान्तिनाथ—कियैक ? खूब त कहैत छलहुँ जे एना खर्च कैलहुँ, ओतय पढ़ैलहुँ... क्लास मे फस्ट-सकेंड होइत अछि... तकरा नीक नौकरिओ नहि ध' भेलैक ?

जनक—स-से कियैक नहि हैतैक ? मुदा बम्बई मे त जानितहि छी रहै मे टाका कोना पानि जकाँ बहि जाइत अछि।

शान्तिनाथ—तेहन बेटा सँ लाभे की जकरा आपन माय-बाप कें खुऐबाक क्षमता नहि रहैत छैक ? तकर त जीयब-मरब सब बराबरि...

जनक—[गोसा कए] शान्तिनाथ बाबू ! हमर बेटा लेल अहाँ मुँह सँ एहन अपशब्द नहि बहार करू ! अहाँ जानैत नहि छी जे ओ...

शान्तिनाथ—[रुष्ट भए] जखन एत्तेक भरोसा अछि आपन बेटा पर त ओकरा सँ उधार कियैक नहि लैत छी ? बजा कियैक नहि लैत छी ओकरा ?

जनक—ओ आबि रहल अछि। [एहि बात पर कमला चौंकैत छथि।]

शान्तिनाथ—आबि रहल अछि ? कहिया आओत ओ ? आबि कए करबे की करत ओ, जकर अपनहि हाल नीक नहि छैक ? आ' से आबौक चाहे नहि आबौक ! हम ताहि लेल बैसल नहि रहि सकैत छी। अगिला सोमवार कें हमर नवका भड़ैती आबि रहल अछि। ता धरि हम ई घर खाली देखै चाहैत छी।

जनक—मुदा अहाँ और किछु दिन ठहरि कियैक नहि जाइत छी ? बौआ आबि कए अहाँ क सबटा किराया चुका देत।

शान्तिनाथ—तकर कोनो प्रयोजन नहि अछि! अहाँ कें विश्वास क' कए हम सब बेर ठगैलहुँ। ईहो अहाँ क एकटा नवे चालि थीक।

कमला—[घोघक अढ़ सँ हाथ निकालैत आपन कंगन खोलि कए] तावत् हिनका ई द' दियन्हु ने, जाहि सँ ..

शान्तिनाथ—हम कोनो साहुकार नहि छी जे सोनाक कंगन लेब। हमरा भाड़ा चाही, सेहो चारि महीनाक... एहि सात दिनक भीतर। नहि त, खाली क' दियौक हमर घर।

जनक—मुदा...

शान्तिनाथ—देखू जनक बाबू! हमर नाम थीक शान्तिनाथ। काजो मे हमरा अशान्ति पसिन नहि... मुदा एहन परिस्थिति मे जँ कनेक अशान्ति करै पड़ैक, त पाछाँ हमरा दोष नहि देब!

[ई कहैत शान्तिनाथ निष्क्रान्त होइत छथि। जनक आपन माथ पर हाथ धैने धीरे-धीरे कुर्सी पर बैसि रहैत छथि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

—:※:—

दोसर दृश्य

[मंचसज्जा पूर्ववत् रहत। जनक एसगरे रस्सी पर टांगल कपड़ा-लत्ता उठा कए चपेति रहल छथि।]

वीन—[नेपथ्य सँ] काकाजी !! काकाजी !! नहि छी की ?

ानक—[स्नेहपूर्ण स्वरें] के छहक ? नवीन ? आबह, आबह !! [एकटा सात-आठ वर्षक बालक प्रविष्ट होइत अछि।] आबह; कतय गेल रहक ?

वीन—खेलैत छलहुँ।

ानक—त चलि कियैक ऐलह ?

ावीन—देखियौक ने— सुशीलबा की सब ने कहैत अछि।

ानक—[धोती कें तह करैत] की कहलकह ओ ?

ावीन—ओ कहैत छल— ओकर बाबूजी अहाँ सब कें एहि मकान सँ भगा देताह।

ानक—[तह करैत-करैत हाथ थम्हि जाइत छन्हि। अपना कें सम्हारि कए पुनः तह करब शुरू करैत छथि।] और की सब कहैत छलह ?

ावीन—कहैत छल जें अहाँ सब नीक लोग नहि छी; पैसा नहि दैत छी ओकर बाबूजी कें, और... और बहुत खराब-खराब बात सब कहैत रहैक ओ। तें हमहूं दू-चारिटा बात सुना देलियैक।

जनक—ओ त ठीके कहैत छल।

नवीन—की ठीक कहैत छल ? जे अहाँ सब बदमास छी ?

जनक—[मृदु-मृदु हँसैत] तखन तोंही कहह— हम सब केहन छी ?

नवीन—अहाँ आ' काकी त कत्तेक नीक छी। हमरा कत्तेक नमंचूस दैत छी, कत्तेक दुलार करैत छी।

जनक—तैयहु दू-एकटा बात त ओ ठीके कहलकह।

नवीन—कोन बात ?

जनक—इयैह जे हम सब दू-एक दिन मे एतय सँ जा रहल छी।

नवीन—कतय ?

जनक—कतय ? [सोचैते उदास भ' जाइत छथि] कतय, के जानैत अछि ?

नवीन—कहू ने कतय जा रहल छी! कियैक जा रहल छी ?

जनक—कियैक जा रहल छी ? हम सब गरीब भ' गेल छी, तैं।

नवीन—कियैक ? एतय गरीब लोग नहि रहैत अछि की ?

जनक—कोना रहत ? ईहो त दुकाने सन थीक। तों दुकानदार कें पाइ नहि देबह त ओ तोरा नमंचूस देतह ?

नवीन—नहि दैत अछि बड़ेबाक दुकान पर... बड़ बदमास अछि...

जनक—बड़ेबे कियैक ? सब तेहने अछि। बिना पाइ के कत्तहु किछु नहि भेंटैत छैक।

नवीन—अहाँ कें पैसा नहि अछि त नमंचूस कोना दैत रहियैक ?

जनक—तखन पाइ रहैक।

नवीन—आब ?

जनक—आब पाइ खतम भ' गेल अछि।

नवीन—हमर बाबू जकाँ अहूँ औफिस जाउ ने। ओतय सँ पाइ ल' आनू।

जनक—[हँसैत नवीन क माथ पर हाथ रखैत छथि।] हमरा त औफिसो-बाला सब भगा देलक औफिस सँ।

नवीन—तखन ? आब अहाँ कोनो काज नहि करब ?

जनक—[नवीन कें ल' कए खटिया पर बैसैत] करब कियैक नहि ? जखन तों औफिस चलैबह, एहि देश कें चलैबह— तखन हमरा काज दिह'। तखन हम फेरो पहिलुके जकाँ काज करबह।

नवीन—आ' हमरा नमंचूस देब ?

जनक—हँ।

नवीन— तखन हम दुनियाक सब लोग कें काज देब।

जनक—तखन दुनियाक सब क्यो तोरा नमंचूस देतह। मुदा, नवीन! तखन त तोरा पास ढेर रास नमंचूस जमि जैतह। ओत्तेक नमंचूस ल' कए तों करबह की?

नवीन—सबटा बच्चा कें एक-एकटा कए बाँटि देबैक।

जनक—आ' हमरा?

नवीन—अहूँ कें देब। मुदा अहाँ त कहैत छी चलि जायब। हम त सबटा रास्ता चिन्हैत नहि छी। अहाँ कें खोजब कोना?

जनक—तखन तों दुनियाक सबटा रास्ता चीन्हि जैबह।

नवीन—नहि। अहाँ आ' काकी एत्तहि रहू।

जनक—कोना रहियह? कहलियह ने, हमरा सभक पास आब पैसा नहि...

नवीन—[टोकैत] तखन अहाँ आपन बेटा कें कियैक नहि बजाबैत छी? हुनका पास त बहुत रास पैसा छन्हि। अहीं त कहैत छलहुँ... [जनक कें निरुत्तर देखि] हुनके एतय मंगा ने लियह। ओ हमर बाबू जकाँ औफिस जैताह आ' अहाँ घर में रहब। तखन अहाँ सँ हम खूब कहानी सुनब। [तावत् कमला आबैत छथि।] कहू ने काकाजी! हुनका ल' आनबन्हि ने?

कमला—[हँसैत] ककरा दय गप भ' रहल अछि?

नवीन—[खटिया पर सँ उतरि कए कमला क पास जा कए] देखियौक ने! काकाजी सँ कहैत छियन्हि अहाँ सभक बेटा कें बजाबै त ओ किछु बाजते नहि छथि।

कमला—[किछु काल चुप रहि जनक क दिसि देखैत छथि। जनक मूड़ी खसा लैत छथि।] नहि नवीन, ओ त एखन नहि आबि सकैत छथि।

नवीन—कियैक?

कमला—ओ जतय रहैत छथि, ओत्तहु एकटा बच्चा रहैत अछि— ओकरो नाम थिकैक नवीन। ओ जँ हुनका छुट्टी दियै, तखने ने औआ आबि

सकैत छथि।

नवीन—हमरा ल' चलू ओतय; त हम ओकरा सँ छुट्टी दिया देब।

कमला—अच्छा! तोरा ल' जैबह। एखन तों जा! खेलह जा कए!!

नवीन—अच्छा। [कहैत दरबाजा दिसि बढ़ैत अछि] मुदा हमरा छोड़ि कए नहि चलि जायब!

कमला—अच्छा! [नवीन चलि जाइत अछि। जनक धीरे-धीरे माथ उठा कए कमला क दिसि देखैत छथि।] शान्ति नाथ बाबू सँ त ओहि दिन कहि देलियन्हि बौआ आबि रहल छथि। कालिह दिन भरिक समय बाकी अछि। आब की हैत? लोग की...?

जनक—[तंग भ' कए] हैत की? हमर बेटा जतय मोन हैत रहत... जहिया मोन हैत आओत। ताहि सँ ककरा की आबैत-जाइत छैक?

कमला—जकरा मुँह छैक, से सुनैबे करत दू-दसटा बात। आइये त झाजी क माय कहैत छलीह— बेटा सियान भ' गेल छह। आब नहि खैबा-पीबाक भार लेतह त कहिया की करतह?

जनक—जे कहैत अछि, तकरा कहै दियौक?

कमला—सुनै त हमरा पड़ैत अछि! जवाबो हमरे... [तावत् नवीन दौड़ल आबैत अछि।] की भेलह नवीन?

नवीन—अहाँ क घरक दिसि के सब ने आबि रहल छथि।

जनक—[खटिया पर सँ उठैत] के आबि रहल अछि? तों कोना जानलह?

नवीन—हम सब खेलैत छलहुँ त देखलहुँ— दू गोट लोग टैक्सी पर सँ उतरि कए अहीं सब दय पूछैत रहथि। ओसब आबितहि हैताह।

जनक—[कमला सँ] के भ' सकैत छथि?

नवीन—एक गोटा कें त बड़का मोंछ छन्हि आ' हाथ मे एकटा लाठी...

जनक—आ' दोसर गोटे? [तखनहि बाहर सँ दू-एक गोटाक स्वर सुनबा मे आबैत अछि। जनक आ' नवीन दुनू बाहर जाइत छथि। जनक नेपथ्ये सँ कहैत छथि] आओल जाय! आओल जाय!

[जनक, रामू आ' श्रीकान्त प्रविष्ट होइत छथि।]

रामू—हिनका चिन्हलहुन्ह की नहि ?

जनक—नहि रामू काका ! हिनका त...

रामू—हिनका तों बुचियाक बियाह मे देखने रहह हो ! [जनक मोन पाड़ैक चेष्टा करैत छथि] वैह उपिन्दर बाबू क सार लगताह... श्रीकान्त मिसर नाम थिकन्हि हिनक...

जनक—ओ ! हँ हँ; देखू त— कत्तेक लज्जाक बात थीक। हम त...

श्रीकान्त—ताहि सँ की भेल अछि ? एकहि बेरि त हमरा देखने हैब, सेहो पनरह वर्ष पहिने...।

[कमला कनेक दूरहि सँ रामू कें गोर लागैत छथि।]

जनक—[कमला क पास आबि कए] हे ! अहाँ कनेक जलपान क व्यवस्था करियन्हु हिनका सब लेल, ता हम... [रामू क पास आबि कए] चलल ने जाय ! हाथ-पैर धो लेल जाय।

रामू—[जनक कें व्यस्त होइत देखि] नहि-नहि, तोरा व्यस्त हैबाक प्रयोजन नहि ! हम सब खा-पीबि कए आयल छी।

जनक—नहि-नहि ! से कोना हैत ? जखन ऐबे कैलहुँ, तखन किछु त खाइये पड़त। गरीब छी, ताहि सँ की ?

रामू—[खुश भ' कए] बेस-बेस !

[कमला निष्क्रान्त होइत छथि।]

जनक—मुदा अहाँ सभक सामान कतय अछि ?

श्रीकान्त—[एक बेरि रामू क दिसि देखैत] से त हम सब...

रामू—सामान होटेले मे अछि।

जनक—होटल मे ? नहि-नहि, ई कोना भ' सकैत अछि ? हमरा एतय रहैत अहाँ सब होटल मे कोना रहब ?

रामू—त की भेलैक ? होटल त लगे पास मे छैक।

जनक—तखन त और नीक ! सामान अनबा मे कोनो दिक्कत नहि हैत।

रामू—कियैक तों बेकार कष्ट करबह ? हम सब त बस कालिहये नॉर्थ बिहार वा मिथिला सँ चलि जैबह।

जनक—एके दिन रहब, त कथी लेल होटल मे पड़ल रहब ? बड़ आदमी हम नहि छी जे हजार टाका खर्च करब। हम सब जे खाइत छी, सैह खुआएब ! से जँ पसिन नहि हो, तखन...

श्रीकान्त—नहि-नहि ! ई की कहैत छी ? से सोचितहुँ त ऐबे कियैक करितहुँ ?

रामू—तोरा कहैत नहि रहियह श्रीकान्त, जे सोभे जनक क ओतय चलह।

श्रीकान्त,—अहाँ दय तत्तेक ने प्रशंसा सुनने छियैक, जे...

रामू—जेहन जनक, तेहने ओकर बेटा। अजुका युग मे... हँ, हम त बिसरिये गेल छलहुँ। बौआ कतय छह तोहर ? नहि देखैत छियह ?

जनक—ओ त... माने...

रामू—बुझलियह ! कत्तहु गेल हैतह अपन दोस्त महीमक पास...।

जनक—नहि, से नहि...

श्रीकान्त—तखन ?

जनक—ओ त बाहरे रहैत अछि।

रामू—बाहर ? कतय ?

जनक—ओ त नौकरी क' रहल अछि ने, तैं... खैर ई सब गप-सप त हैते रहत। चलू, पहिने होटल सँ...

रामू—हँ, हँ ! सैह नीक। चलह हौ श्रीकान्त !

[तीनो गोटे उठैत छथि। बत्ती मिझा जाइत अछि।]

—:❀:—

तेसर दृश्य

[मद्धिम आलोक मे रामू आ' श्रीकान्त कें सूतल देखल जाइत अछि। दरबाजा क पास ठाढ़ भ' कए जनक आ' कमला बातचीत करैत छथि। हिनका दुनू पर अल्प रेख स्थापित छन्हि।]

जनक—भोर त भ' गेल अछि। मुदा ई सब त सूतले छथि।

कमला—ई सब की कहने रहथि ? आइ जैताह ?

जनक—हँ, आइये सँझुका पहर जैताह।

कमला—गाड़ी पर चढ़ावै जायब की ?

जनक—पागल भेलहुँ ? हिनका सभक संग जैबाक अर्थ भेल हमरा टैक्सी किराया सेहो गनै पड़त। ओत्तेक पाइ कतय सँ आओत ? एहि एकहि दिन मे की कम पाइ खर्च भेल अछि ?

कमला—सेहो ओ सोनाक चूड़ी बाँचल छल, तैं। नहि त...

[दुनू किछु काल चुप रहैत छथि।]

जनक—ओसब बौआ दय पूछैत छलाह।

कमला—की कहलियन्हि ?

जनक—की कहबन्हि ? नौकरी करैत अछि एम० ए० पास कैलाक बाद... बम्बई मे रहैत अछि, इयैह... और की कहितहुँ ?

कमला—ई सब आयल कियैक छथि, से पता लागल ?

जनक—राति खन त गामे-घरक गप-सप चलैत छल, आ'...

[एतबा मे खोंखीक शब्द सुनि कए दुनू चुप भ' जाइत छथि। रामू जागि जाइत छथि। कमला निष्क्रान्त होइत छथि। जनक रामू क दिसि बढ़ैत छथि। तावत् मंच क आलोक धीरे-धीरे बेसी भ' उठैत अछि।]

नीन भेल कि नहि नीक जकाँ ?

रामू—खूब सुतलहुँ की ! सबटा थकान दूर भ' गेल अछि ।

[तावत् श्रीकान्त सेहो जागि जाइत छथि ।]

जनक—मुदा ताहि सँ लाभ की भेल ? आइये कहैत छी चलि जायब । और दू-चारि दिन...

श्रीकान्त—असल मे गिरहथक लेल त एखन घर मे रहब अत्यन्त आवश्यक होइत अछि । कटनीक समय थिकैक... घर मे क्यो अछि नहि जे सम्हारत। सबटा भार छोटका लोग पर द' कए ऐलहुँ । आ' आइ कालिह त जानिते छी ककरो विश्वास नहि...।

रामू—हिनकर बेटा त पटना मे नौकरी करैत अछि । तैं एखन घर मे माय-बेटी कें छोड़ि कए क्यो नहि... नहि त...

जनक—मुँह-हाथ धो ने लियह तावत्... नाश्ता तैयार अछि ।

रामू—तोरो स्वभाव तोहर बाबूए जकाँ भेलह— विनय आ' अतिथि सेवा मे कम नहि जाइत छह ।

जनक—[ताखा पर सँ दँतमनि उठा कए दैत] चलू ! अहाँ दुनू कें पानि क कल देखा दैत छी । [रस्सी पर सँ गमछी उठा कए श्रीकान्त कें दैत आगाँ बढ़ैत छथि । तीनो गोटे मंच सँ निष्क्रान्त भेलाह । जनक घुरि आबैत छथि आ' घरक अस्त-व्यस्त चीज-वस्तु कें सजाबै लागैत छथि । एतबा मे नेपथ्य सँ शान्तिनाथ क स्वर सुनल जाइत छन्हि ।]

शान्तिनाथ—[नेपथ्य सँ] जनक बाबू ! जनक बाबू !!

जनक—[शान्तिनाथ क स्वर सुनितहि चौंकि उठैत छथि ।] के ? शान्तिबाबू ?

शान्तिनाथ—[प्रविष्ट भए] हँ, हमहीं छी । आइ सातम दिन थीक । तैं सोंचलहुँ भोरे-भोर अहाँ कें सुप्रभात क' आबी ।

जनक—[अनुरोध क स्वरें] मुदा हमर घर मे त कालिह अतिथि आयल छथि...

शान्तिनाथ—से कालिह गंधे सँ पता चलल छल । एहि दने जाइत छलहुँ त सूंघि कए बुझलहु जे मांस रिन्हल जा रहल छल ।

जनक—शान्तिनाथ बाबू! कृपा क' कए हमरा और एक दिन समय दियह। ओ सब आइये चलि जैताह।

शान्तिनाथ—जाथु; ताहि सँ हमरा की ?

जनक—हुनका सभक सामने हमरा बेइज्जति नहि करू... हम कल जोड़ैत छी

शान्तिनाथ—हम अहाँ कें पहिनहि कहि देने छलहुँ जे एहि बेर हम कोनो बहाना नहि सुनब। आइये दुपहरि धरि हमरा ई घर खाली चाही। ता धरि हमर नवका भड़ैती आबि जायत! हम बहुत दिन सँ हुनका घुरा रहल छियन्हि— 'आइ नहि, कालिह' कहि कए। मुदा आजुक लेल हमहीं हुनका कहि देने रहियन्हि। ओ आबिते हैताह।

जनक—मुदा अहाँ नहि बूझि रहल छी जे हमर हाल की हैत।

शान्तिनाथ—हम सब किछु बूझि रहल छी। अतिथि कें खुऐबाक लेल त टाका क जोगाड़ ठीके क' सकलहुँ। आ' हमरे किरायाक बेरि मे टाका नहि रहैत अछि। ओ सब नहि चलत।

जनक—मुदा......

शान्तिनाथ—कोनो मुदा नहि। [रामू आ' श्रीकान्त क गला क स्वर नेपथ्य सँ भासल आबैत अछि।] हम प्रयोजन पड़ला पर अशान्ति सेहो क' सकैत छी।

जनक—हे; ओ सब आबि रहल छथि। हुनका सभक सामने किछु नहि कहबन्हि। ई हमर इज्जतिक प्रश्न थीक।

[शान्तिनाथ निरुत्तर रहैत छथि। बात करैत-करैत रामू आ' श्रीकान्त दरबाजा सँ भीतर आबैत छथि। मुदा एकटा अनचिनहार व्यक्ति कें ठाढ़ देखि कए दुनू चुप भ' जाइत छथि।]

रामू—[जनक आ' शान्तिनाथ— दुनू कें निरुत्तर देखि] जनक! हिनका नहि चिन्हलियन्हि।

जनक—ओ; ई छथि शान्तिनाथ बाबू... हमर मकान मालिक। [रामू आ' श्रीकान्त नमस्कार करैत छथि। शान्तिनाथ हाथ जोड़ैत छथि। जनक

शान्तिनाथ सँ कहैत छथि—] आ' ई छथि रामू काका, अपने गाम मे रहैत छथि... आ' ओ भेलाह श्रीकान्त बाबू... हिनक मित्र...।

रामू—लागैत अछि, अपनहु मैथिले छी। नहि ?

शान्तिनाथ—हूँ।

रामू—वाह ! बड़ खुशी भेल अहाँ सँ परिचित भए। मैथिल भ' कए बँगाल मे कलकत्ता सन शहर मे एत्तेकटाक मकान बनौने छी— ई बड़ आनन्दक गप।

श्रीकान्त—आ' तकर बादो जे ओ गाम घरक लोग कें नहि बिसरलन्हि, हमरा लखे से और आनन्द क बात थीक। एहि मकान क बेसी फ्लैट मे त मैथिले परिवार कें देखैत छियन्हि।

जनक—से हिनक उदारता थिकन्हि।

शान्तिनाथ—[जनक क दिसि तीर्यक् दृष्टियें देखैत] उदारताक कोन बात भेल एहि मे ? मकान-मालिक कें चाहियन्हि पाइ... भड़ैती कतौको होथि...

रामू—मुदा भड़ैती नीक रहने त अहीं कें फायदा...

शान्तिनाथ—से ठीक कहलहुँ।

रामू—आ' मैथिल त ओना शान्तिप्रिय होइते छथि।

शान्तिनाथ—से होइत छथि।

रामू—अहाँ सँ की कहू ? मैथिल त एत्तेक ने शान्तिप्रिय होइत छथि जे ओकर मिथिला कें क्यो बंजर क' दैक, ओकर भाषा आ' अधिकार कें छिनियो लैक ,तैयहु ओ किछु नहि कहत।

श्रीकान्त—[हँसैत] ई त यथार्थ कहलहुँ।

शान्तिनाथ—हमहूँ तहिना शान्तिप्रिय छी। नहि त आइ एकटा सँ चारिटा मकान बना लेने रहितहुँ।

रामू—से कोना ?

जनक—[बात कें टारैत] से सब बड़ नमहर कहानी थीक। हम बरु जलखै केर बन्दोबस्त करी।

राम—दुनू होमै ! गप आ' जलखै मे कोनो बिरोध अछि थोड़बे ?

शान्तिनाथ—कतेको व्यक्ति एहन छथि जे कैक महीनाक भाड़ा नहि देने छथि। हम शान्तिप्रिय नहि रहितहुँ त एहन भड़ैती कें कहिया ने जबरदस्ती भगा दितहुँ। एहि लेल हमरा कम नोकसान भेल अछि ? मुदा, आब स्थिर कैने छी— जे एहि सब मामला मे आपन मैथिलत्व क वर्जन करी।

रामू—हँ, तखन अहाँ क भड़ैती लोकनिये जे नीक होथि, जेना कि जनक छथि... तखन त...

शान्तिनाथ—हँ, तखन त भाड़ा क लेल चिन्ते नहि करै पड़त। जनक बाबू क स्थान एहि मे सब सँ ऊपर छन्हि।

[एहि बात पर रामू आ' श्रीकान्त क पाछाँ सँ जनक कल जोड़ैत इङ्गित सँ शान्तिनाथ कें एहि विषय पर आलोचना कें बन्द करबाक अनुरोध करैत छथि।]

श्रीकान्त—हमहूँ सब ओत्तहि सँ हिनक तत्तेक ने प्रशंसा सुनैत छियन्हि जे...

रामू—तैं श्रीकान्त बहुत दिन सँ हमरा कहैत छल जे चलू! हुनका सँ परिचय करा दियह !'

श्रीकान्त—एत्तेक बेरि कहबाक बादे त अहाँ ल' आनलहुँ। नहि त...

रामू- [मृदु हँसैत] और ई मात्र परिचये धरिक सम्बन्ध नहि बनावै चाहैत छथि।

जनक—तखन ?

रामू—दुनू परिवार मे जाहि सँ एकटा मधुर सम्बन्ध स्थापित होमै, हमहूँ ताहि लेल विशेष उत्सुक छी।

श्रीकान्त—गत वर्ष जेना धूमधाम सँ बेटा क बियाह करौने रहियैक, एहि वर्ष तहिना खूब नीक जकाँ आपन बेटी क बियाह करैबाक इच्छा अछि। [रामू कें देखा कए] हिनका सँ हम कहनहि रहियन्हि जे ताहि लेल दस-बीस हजार जँ खर्चो करै पड़ैक त हम तैयार छी। मुदा लड़का टा नीक आ' नीक घरक हो, तखनहि तैं...

जनक—हमरा नज़रि मे त तेहन कोनो लड़का नहि अछि... हँ, हमर सासुर

से एकटा... मुदा ओकर उमर बेसी हैत... [तावत् कमला जलखै ल' आनैत छथि। जनक उठि कए हिनका सब कें जलखै दैत छथि। तकर बाद कमला तीन कप चाय आनैत छथि आ' जनक रामू, श्रीकान्त आ' शान्तिनाथ क दिसि चाय क प्याली बढ़ाँ दैत छथि।] लेल जाय!

रामू—आ' तों ?

जनक—चाय त हम पीबिते नहि छी। आ' जलखै हम भोरे कैने छी। बहुत भोरे कें उठैत छी कि नहि!

रामू—कियैक ? भोरे कें औफिस जाइत छह की ?

जनक—हूँ।

रामू—तखन आइ नहि गेलह ?

जनक—अजुका लेल हम कालिह्ये छुट्टी नेने छलहुँ।

रामू—देखह त... तों हमरा सभक लेल...

शान्तिनाथ—मुदा कालिह त रवि छल... त कालिह छुट्टी कोना लेलहुँ ?

श्रीकान्त—ठीके! हमरा सभक लेल अहाँ लोकसान क' रहल छी!

शान्तिनाथ—[जनक क निषेधपूर्ण इङ्गित क उपेक्षा करैत] ओ! हम त बिसरिये गेल छलियैक! आइ कालिह त हिनका छुट्टीये छुट्टी रहैत छन्हि।

श्रीकान्त—से कियैक ?

शान्तिनाथ—छुट्टी ल' कए ई त कतहु घुरै जायबला रहथि।

श्रीकान्त—सत्ये की ? कहिया ?

जनक—नहि... माने...

शान्तिनाथ—ई लजा रहल छथि... हमरा त अजुके नाम कहने रहथि।

रामू—आइये जायबला छह तों ? एह हे! देखह त... आ' ई नहि कहितथि त हम सब जानबो नहि करितहुँ! जे हो...

जनक—नहि-नहि। हम त छीहे...

शान्तिनाथ—दुपहर धरि त छथिये! ट्रेन त प्रायः...

जनक—नहि, हम सब...

श्रीकान्त—देखू जनक बाबू! हमरा सभक लेल आपन प्रोग्राम कें स्थगित नहि राखू! हमहूँ सब त बेड़ियाक ट्रेन पकड़बे करब। तैं संगे चलब एतय सँ। नहि?

जनक—से देखल जैतैत। अहाँ आपन बेटी क बियाह दय की ने कहैत छलहुँ? कहू त हमर सासुर क ओहि लड़के पर...

रामू—अरे, रहै दहक आपन सासुरक लड़का कें सासुरे मे। तकरा दय हम सब थोड़बे बात करै आयल छियह!

जनक—तखन?

रामू—[श्रीकान्त सँ] नहि! जनक एत्तेक सोभ लोग अछि जे... [जनक सँ] हम सब त तोरे बेटा पर कथा ल' कए आयल छियह!

जनक—हम... माने... हमर बेटा पर?

[शान्तिनाथ एतबा मे उच्च स्वरें हँसै लागैत छथि।]

रामू—[हँसै लागैत छथि] बुझू! हम सब बात क' रहल छलहुँ जनक क बेटा क बियाह क आ' ओ

शान्तिनाथ—[हँसी कें सम्हारैत] जनक बाबू क बेटा पर कथा? [पुनः हँसै लागैत छथि।]

रामू—से कियैक? हँसैत कियैक छी?

शान्तिनाथ—हँसैत छी एहि लेल जे जँ ई बियाह सपना मे हो त ठीक अछि। नहि त...

रामू—[रुष्ट भ' कए] माने?

शान्तिनाथ—माने? हिनके सँ पुछियन्हु ने! की औ जनक बाबू? किछु कहियन्हु ने!

जनक—हँ... नहि...

शान्तिबाबू—पुछियन्हु ने कतय छथि ओ?

जनक—से ओ जानैत नहि छथि की?

रामू—ओ त बम्बई मे रहैत अछि... से सब जानैत अछि...।

शान्तिनाथ—पूछियन्हु, कतय रहैत अछि ओ ? कोन मुहल्ला मे ?

जनक—ओ... माने... एखन त मकान बदललक अछि... तैं—

शान्तिनाथ—[रामू सँ] अहाँ हिनक बेटा कें एमहर देखने छी ?

रामू—देखब कियैक नहि ? बुचियाक बियाह मे त जनक ओकरा नेने आयल छल। तखनहि...

शान्तिनाथ—मुदा एमहर त नहि ने देखलियैक ?

रामू—से कोना देखब ? होस्टल मे रहि कए पढ़ैत छल... तकर बाद त नौकरीये धैलक...

शान्तिनाथ—[हँसैत] जनक बाबू सँ पूछियन्हु त वैह एकर पहिने कहिया देखलन्हि आपन बेटा कें ?

जनक—[रुष्ट भए] की कहैत छी ?

शान्तिनाथ—[जनक बाबू क उपेक्षा करैत] हमरा त कहियो-कहियो सन्देह होमै लागैत अछि जे ओ बाँचलो अछि वा नहि...

जनक—[चीत्कार करैत] शान्तिनाथ बाबू। बन्द करू बकवास !

रामू—की बात थीक ? हम सब त किछु नहि बूझि रहल छी। ई सब प्रश्न उठैत कियैक अछि ?

शान्तिनाथ—हिनका सभ कें आइ पाँच-सात वर्ष भ' गेल एहि मकान मे। हजार बेरि सुनलियन्हि जे हिनक बेटा ई छथि त ओ छथि... बम्बई मे छथि... खूब कमाबै छथि... मुदा कहियो त देखलियन्हि नहि... आ' जकर बेटा खूब कमाबैत अछि ओ एहि मुहल्ला मे एहन घर मे कियैक पड़ल रहत ?

जनक—भगवान क सपथ, चुप रहू ! शान्ति सँ रहै दियह हमरा...

[तावत् नेपथ्य सँ ककरहु गलाक आवाज सुनल जाइत अछि।]

कार्त्तिक—[नेपथ्य सँ] शान्तिनाथ बाबू छी की ?

शान्तिनाथ—[दरबाजा क पास जा कए] के छी ? ओ! अहाँ ? रहू... एक मिनट ! [घुरि कए जनक क पास आबि] जनक बाबू। हमर नवका

भड़ैती आबि गेलाह। आब अहाँ शान्ति सँ रहू... मुदा, एतय नहि—आन कतहु .. जाहि सँ हमहूँ शान्ति सँ रहि सकी !

रामू—[रामू आ' श्रीकान्त एक दोसराक दिसि देखैत छथि। जनक निरुत्तर ठाढ़ रहैत छथि।] की बात थीक शान्तिनाथ बाबू? हम सब त किछु नहि बुझि रहल छी।

शान्तिनाथ—[क्रूर दृष्टियें जनक क दिसि देखैत] बुझब कोना? ई अहाँ सभक दृष्टि पर धूरा जे झोंकने छथि। अहाँ क ई आदर्श व्यक्ति आइ पाँच मास सँ हमरा भाड़ा नहि देने छथि। ने हिनका नौकरीये छन्हि जे ई पैसा देताह। चारू कात क लोग सँ उधार ल' कए आपन शान देखा रहल छथि।

रामू—जनक, ई हम सब की सुनि रहल छी? की ई सत्य थीक?

[जनक जवाब नहि दैत छथि।]

शान्तिनाथ—हमरा त ईहो सन्देह होइत अछि जे आपन बेटा दय जे चारू कात ई कहने घुरैत छथि, से सबटा फूसि थीक। भरिसक हिनकर उद्देश्य छलन्हि बेटा सँ बियाहक नाम पर टाका ल' लेबाक !

जनक—[आहत स्वरें] शान्तिनाथ बाबू। ई अहाँ की कहि रहल छी?

शान्तिनाथ—ठीके कहि रहल छी। ई त नीक भेल अहाँ सब कें पहिनहि सबटा पता चलि गेल। नहि त...

श्रीकान्त—मुदा बेटा कें बिना देखने हम सब तिलक थोड़बे देतिहन्हि?

शान्तिनाथ—[हँसैत छथि। श्रीकान्त सँ] अहाँ त हिनकर बेटा कें देखनहु नहि छियन्हि। [रामू सँ] और अहाँ! पनरह वर्ष पहिने देखने रहियन्हि। आइ जँ पाइक लालचें आन ककरहु ओ बेटा कहि कए ठाढ़ क' देथि त अहाँ चिन्हि सकबन्हि?

जनक—शान्तिनाथ बाबू!

शान्तिनाथ—[गरजैत] अहाँ चुप रहू! अहाँ क चारि सौ बीसी सबटा हम जानैत छी।

जनक—मुदा रामू काका ! विश्वास करू...

रामू—छी-छी, जनक ! हम सब तोरा द्दय की ने सुनैत छलहुँ आ' तों... छी छी-छी !

कार्त्तिक—[तावत् असन्तुष्ट भए प्रविष्ट होइत] की भेल शान्तिनाथ बाबू ? हमरो कारखाना जाय पड़त कि नहि ? अहाँ कहने छलहुँ अजुका नाम आ' आइ धरि कमरा खाली नहि... [तावत् जनक क दिसि हुनक नजरि पड़ैत छन्हि आ' ओ चुप भ' जाइत छथि ।]

जनक—[कार्त्तिक कें देखि आनन्दित भए] बौआ ! [कहैत ओ आगाँ बढ़ैत कार्त्तिक क हाथ धरैत छथि ।] बौआ ! तों आबि गेलह ! मुदा तों कोना ऐलह ? एतहुका पता कतय भेंटलह ?

शान्तिनाथ—[रामू सँ] आब हमर नवका भड़ैतिये कें ई बौआ बनैबाक चेष्टा क' रहल छथि ।

जनक—चेष्टा कियैक करब ? इयैह त थिकैक हमर बेटा, जकरा द्दय हम...

शान्तिनाथ—कियैक फेरो भूठ बाजि रहल छी ? ने ई बम्बई मे रहैत छथि, ने ई हजारक हजार टाका कमबैत छथि...

जनक—[करुण स्वर मे, कार्त्तिक सँ] बौआ ! तों कहि दहक हिनका सब कें जे तोंही...

कार्त्तिक—की कहि देबन्हि हिनका लोकनि कें ? के छी अहाँ जे तखन सँ 'बौआ' 'बौआ' क रट लगौने छी ? के थीक अहाँ क बौआ ?

जनक—[आहत भए] तों... तों कहैत छह...?

कार्त्तिक—शान्तिनाथ बाबू ! के छथि ई सब ? अहाँ त कहने छलहुँ सोमवार धरि कमरा खाली भेंटि जायत, मुदा ई सब...

[तावत् जनक दुनू हाथें मुँह भाँपि लैत छथि]

शान्तिनाथ—अहाँ व्यस्त जूनि होउ कार्त्तिक बाबू ! ई एकटा चारि सौ बीस जूटि गेल छलैक... एखनहि कमरा खाली भ' जायत...

नवीन—[दौड़ैत प्रविष्ट भए] काकाजी ! काकाजी ! इयैह छथि ने अहाँ क

बौआ ? अहाँ जे हमरा पुरनका फोटो देखौने छलियैक, ई त देखै मे ओहने छथि। [जनक कें निरुत्तर देखि] कहियौ ने काकाजी ! इयैह छथि ने ओ ?

कमला—[प्रविष्ट भए, अस्पष्ट स्वरें] बौआ !

जनक—[मुँह पर सँ हाथ हँटा कए] बौआ ? के थीक बौआ ?

कमला—की कहैत छी ?

जनक—ठीके कहैत छी कमला। ई नहि थीक हमरा सभक बौआ !

कमला—[कार्त्तिक क पास जा कए] ई की कैलह तों ? तोहर बाबू तोरा पर आपन सब किछु स्वाहा कैलथुन्ह कि इयैह दिन देखबा लेल ? तोहर मोन मे हमरा सभक लेल कनेको जगह नहि छह ?

जनक—ककरा सँ बात क' रहल छी कमला ? देवार सँ ? ओकर मोन मे हमरा सभक लेल जगह रहितैक त आइ हमरा सभक ई हाल होइत ? हमर मोन त एकरा दस वर्ष पहिनहि चीन्हि गेल छल, जखन ई शराब आ' जुआ क पाछाँ हमर खून-पसीना क अरजल पैसा बहौनाइ शुरू कैने छल। मुदा कमबख्त हृदय कहाँ मानैत अछि से... [कहैत अश्रुसंवरण क वृथा चेष्टा करैत छथि।]

[कमला कानै लागैत छथि।]

नवीन—काकाजी ! ई अहाँ क बौआ नहि छथि त कतय छथि ओ ?

जनक—ओ अछि। ओ त सदिखन हमरहि पास रहैत अछि... एतय, हमर हृदय मे...। नहि कानू कमला, चलू ! आब हमरा सभक दिन शेष भेल अछि। ई हम सब गलत दुनिया मे आबि गेल छलहुँ। एतय सम्बन्ध आने तरहक होइत अछि। एतहुका नियम किछु औरे थीक... चलू कमला। एतय जीवन एकटा चालाकी थीक... हमरा सँ से आब नहि हैत, और नहि हैत... [कहैत-कहैत वाक् रुद्ध भ' जाइत छन्हि। दुनू गोटे दरबाजा क दिसि बढ़ैत छथि। कार्त्तिक मुँह घुरौने ठाढ़ रहैत छथि। मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

—:❀:—

इन्द्रमा

पात्र-परिचय

अवध कुमार सिंह—एक उच्च घरक उच्चशिक्षित, नव-विवाहित एवं भद्र राजपूत युवक।

इन्द्रमा —मध्यवित्त घरक एक अपूर्व सुन्दरी, मुंदा वाक्-शक्ति-रहिता नवविवाहिता कन्या—अवधक पत्नी।

अशोक कुमार सिंह—अवधक छोट भाइ।

गीतहारि मित्रगण।

—❀—

व्यवस्थादि

समय : विवाहक बाद, चतुर्थीक राति।

स्थान : अवध क घर, इन्द्रमाक सासुर।

मंचसज्जा : पलंग, सुदृश्य ओछाओन, फूल, टेबुल, चेयर, कागज, कलम, एकटा खिड़की आ एक दरबज्जाक फ्रेम।

अंगसज्जा : इन्द्रमाक लेल विवाहक पोशाक लाल बनारसी; सिनूर; काजरि; लाली; कान-नाक-हाथ-गला-आ' पैरक गहना; रूमाल आदि। अवधक लेल दामी सिल्कक कुर्त्ता, रंगल धोती, घड़ी, हाथ में माला आदि।

अशोकक लेल मूल्यवान कुर्त्ता-पजामा।

आलोक : अशोकक आगमनक पूर्व धरि आलोक वन्या, जकर रंग हैत नीलाभ।

अशोकक आगमनक बाद वैह आलोकक रंग रहत लाल।

अन्त मे एक मध्यवर्ती आलोक वृत्त (मीडियम स्पौट) क काज अछि।

संगीत : दूटा कोहबरक गीत : "बैसल छथि भगवान हे"...... एवं "कंचन महल मानिक केर दियरा..."।

एकरा छोड़ि कए आन कोनो संगीतक योजना नहि अछि, मुदा चाही त अतिरिक्त संगीत द' सकैत छी।

—※—

१थ्य सँ कोहबरक गीत सुनल जा रहल अछि। विवाहक बाद चतुर्थीक थिक। वर-वधू गेठबन्धन कयने चौठक याग-यज्ञ-पूजादि करबाक लेल वर मे आयल छथि। चतुर्थीक करणीय काज सब भ' गेल अछि। आब वधूक मिलनक समय आयल अछि। वर अवध कुमार सिंह शिक्षित तथा राजपूत युवक छथि—नीक नौकरी करैत छथि। हिनक व्यवहार मे शहरू ाक छाप छन्हि। वधू अपूर्व सुन्दरी, मुदा मध्यवित्त घरक कन्या छथि।]

कोहबरक गीत

बैसल छथि भगवान हे ओहि कोहबर घर मे
बैसल छथि सीताराम हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि चौर डोलौती हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि अंग लगौती हे ओहि कोहबर घर मे
छोटकी सारि चौर डोलौती हे ओहि कोहबर घर मे
सरहोजि अंग लगौती हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि भरती सचार हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि डाबर नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे
अपन सासु भरती सचार हे ओहि कोहबर घर मे
छोटकी सारि डाबर नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि पान नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि झारी नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे
सरहोजि पान नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे
छोटकी सारि झारी नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे

केओ सखि पलंग ओछौती हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि अंग ल[illegible]ी हे [illegible] कोहबर घर मे
सरहोजि पलंग ओछौती हे ओहि कोहबर घर मे
कनियाँ प्यारी अंग लगौती हे ओहि कोहबर घर मे

[अन्हारहि मे एहि गीतक समाप्तिक संगहि संग हँस्सीक आवाज अबैत अछि। क्यो कहैत अछि—'भेलह, आब चलह एतय सँ।' दोसर क्यो कहैत अछि : —'ठीके''' गीत बहुत भेल अछि''' आब चलू'' देखैत नहि छियैक'' अहाँक माइक मुँह''' और देर करब त''''। एतबहि मे सब क्यो हँसैत छथि आ हँसैत-हँसैत घर सँ चलि जाइत छथि। दरबज्जा बन्द करबाक शब्द होइत अछि। जखन सबटा शब्द विलीन भए परिवेश शान्त भ' जाइत अछि, तखन मंच आलोकित भ' उठैत अछि। मंचक बाम दिसि एकटा खिड़की आ दहिना दिसि एकटा दरबज्जा देखल जाइछ। मंचक मध्य मे एकटा पलंग राखल अछि फूल सँ सजाओल। एक कोना मे एकटा टेबुल आ चेयर अछि। कनियाँ कुर्सी पर माथ झुका कए बैसल छथि। अवध दरबज्जा लग पाछाँ दिसि मुँह घुरा कए ठाढ़ छथि।]

अवध—[गला खखारैत छथि। पाछाँ घुरैत कनियाँ दिसि देखैत छथि। की करताह किछु नहि फुरैत छन्हि। बेर-बेर अपन पोशाकक दिसि देखैत छथि जे कत्तहु त्रुटि रहि गेलन्हि कि नहि। तकर बाद माथ पर हाथ फेरैत बुझबाक प्रयास करैत छथि जे हुनक केश ठीक-ठीक थकरल छन्हि वा नहि। तकर बाद धीरे-धीरे पलंगक दिसि आगाँ बढ़ैत छथि। पलंगक पास आबि कए थम्हैत कहैत छथि] अहाँ कें बड़ कष्ट भेल हैत'''ई सब त अहिना माने आधा राति बिना बितौने जैबे नहि करैत छथि''' [एकर उत्तर मे नातिदीर्घ घोघक अढ़ सँ कनियाँ माथ डोला कए हुनका कोनो कष्ट नहि भेल छन्हि, एहन इंगित करैत छथि।] '''एखनहु देखू ने ओसब गेल हैतीह थोड़बे''' एत्तहि कत्तहु हैतीह। [ई सुनितहि लगैत

अछि जे कनियाँ जेना किछु त्रस्त सन भ' जाइत छथि। सशंक चित्त भए ओ मुँह उठा कए देखै लगैत छथि जे क्यो अछि कि नहि। तहिना देखैत-देखैत पतिक दिसि दृष्टि पड़ि जाइत छन्हि कि ओ माथ झुका लैत छथि लाजें। अवध अपन नवविवाहिता पत्नीक एहि लज्जा भावक नीक जकाँ उपभोग करैत कहैत छथि—] से जौं ओ सब सुनबाक लेल दरबाजा जा देबार मे कान कें साटिये लेने हैतीह—त करै दियन्हु। आ से हैबे करतीह कि'''[एतबा मे नेपथ्य सँ दुइ-तीन गोटेक हँस्सी क शब्द भासल अबैत अछि। चौंकि कए अवध दरबज्जाक दिसि देखैत छथि आ कनियाँ घोघ कें और नमहर बना लैत छथि।] रहू हम देखैत छियन्हि ज के सब छथि'''के सब रहतीह से त हमरा पते अछि ई सबटा छोटकी भौजीक काज थिकन्हि''''''।

[अवध ई कहैत निष्कान्त भ' जाइत छथि। कनियाँ ब्लाउज मे खोंसल कलम निकालि कए एक टुकड़ी कागज पर किछु लिखैत छथि। तावत् अवध पुनः प्रविष्ट होइत छथि। हुनका देखितहि ओ कलम आ कागज नुका लैत छथि। मुदा अवध से देखि लैत छथि। ओ पास आबि कए कहैत छथि—] भगा देने छियन्हि सब गोटा कें। आब लगपास क्यो नहि छथि। [तैयहु कनियाँ कें निरुत्तर देखि कए] की लिखैत छलहुँ''' देखियैक! [ई सुनितहि कनियाँ लिखलका कागज के और नुका'बै चाहैत छथि] अच्छा-अच्छा'''नहि देखब अहाँ की लिखैत छलहुँ! मुदा'' [और अगुआ कए] ई घोघक आड़ मे जे अपन मुँह कें नुकाकए रखने छी''से त कम सँ कम देखै दियह! [अवध घोघ हटा दैत छथि। कनियाँक अपूर्व सुन्दर मुख देखि कए ओ आनन्दित होइत छथि। कनियाँ अपन दुनू हाथें आँखि मुनि लैत छथि।] एत्तेक सुन्दर मुख त हम एक सपने मे देखने छलहुँ। मुदा मुँह जखन देखै देलहुँ, तखन पुन अपन आँखि कें कियैक नुका लेलहुँ? से हमरा देखै नहि देब? [कनियाँ ई सुनितहि हाथ हटा कए धीरें-धीरें आँखि खोलैत छथि। एक बेरि पतिक

दिसि देखिये कए आन दिसि मुँह घुरा लैत छथि लाजें। अवध हुनक एकटा हाथ अपन हाथ मे लैत छथि, मुदा ओ मुँह घुरौनहि रहैत छथि ।] सुनू देखू ने एम्हर···[कनियाँ धीरें-धीरें मुँह अपन पति दिसि घुरबैत छथि, मुदा मूड़ी निहुरा कए रहैत छथि] एत्तेक सुन्दर मुख त देखै देलहुँ, मुदा एहि मुख कें आइ सँ कोना बजायब···नाम त नहियें कहलहुँ अपन···[कनियाँ हाथ छोड़ा कए लिखलका कागज में सँ एकटा निकालि कए अवधक हाथ मे दैत छथि। अवध चकित भए कागज हुनक हाथ सँ लैत छथि आ' पढ़ै लगैत छथि—] "जे अहाँ नाम राखी, सैह नाम रहत सबदिन।" [हँसैत] मुदा हमरा पास एत्तेक शब्द कतय अछि जे अहाँक नाम राखि सकी···। हमरा त उपमाक कोनो ज्ञाने नहि ताहि पर सँ हम बड़ दरिद्र छी । [सोचैत] ककरहु सँ सुनलहुँ—अहाँ साहित्यक छात्रा छलहुँ···अहीं कहू ने···एहि अनिन्द्य रूप क नाम की भ' सकैत अछि ?···[कनियाँ लजा कए कुर्सी पर सँ उठि कए खिड़कीक पास चलि जाइत छथि। अवधो पाछाँ-पाछाँ ओतय आबि जाइत छथि।] की भेल कहलहुँ नहि, कोन नाम सँ बजायब अहाँ कें ? [कनियाँ तखन और एकटा कागज हुनक हाथ मे दए त्वरित गतियें एक बेरि पतिक मुँह क दिसि देखैत मुँह घुरा लैत छथि। अवध पढ़ैत छथि—। 'घरक लोग नाम रखने रहथि—इन्द्रमा।' इन्द्रमा ! वाह··अपूर्व नाम !! कनियाँ कें पकड़ैत ओ हुनका खिड़की दिसि सँ घुरा कए अपना दिसि क' लैत छथि—] इन्द्रमा ! ··ओम्हर की देखैत छी···हमरा दिसि देखू ने ! [अपन आंगुर सँ कनियाँक अवनत मुख कें उठबैत छथि] अहाँक नाम त इन्द्रमा थिक। जानैत छी हमर नाम की थिक ? [इन्द्रमा स्वीकृति दैत छथि माथ डोला कए] कहू त··· की थिक ? [ओ माथ डोलाबैत छथि] कियैक, 'नहि' कियैक ? ई त भेल गाम घरक नियम जे पतिक नामे नहि लेब··· आ' हम त छी शहरी लोग। ओतय त सब अपन-अपन पतिकें नामे ध' कए बजबैत छथि। ओतय त अहूँ कें तहिना करैटा पड़त, नहि

त ओतहुका लोगसब त खूब चिढ़ाओत''' वहू ने एकबेरि'' अहाँक ओहि पातर मोलायम ठोर मे हमर नाम देखबा मे केहन लागत, से हम सोचियो नहि सकैत छी''' एकबेरि'' मात्र एवकेबेरि''' प्लीज ! [मुदा इन्द्रमा माथ डोलाकए बारंबार अस्वीकृतिक इंगित करैत छथि तखन हारि कए अवध कहैत छथि—] अच्छा ठीक अछि, तखन नहियें कहू । मुदा शहर मे त कहैये पड़त । ओतय त जेहन ने भीड़ रहैत अछि जे बहुत लोग हेरा जाइत अछि''' साथ छुटि जाइत छैक चलैत-चलैत । अहिना जों कहियो दुनू गोटेक चलैत-चलैत साथ छुटि जाय, त की करब ! तखन त हमरा नाम ध' कए शोर करैये पड़त, नहीं ? [इन्द्रमा माथ डोलबैत छथि] तैयहु नहि बाजब ? तखनहु नहि हाँक देब त हेराइये जायब ! आ से भेने त फेर कहियो नहि मिलि सकब हम दुनू'' [ई सुनितहि इन्द्रमा मूड़ी खसा लैत छथि एवं हुनक आँखि सँ टपटप नोर चूबै लगैत छन्हि] ई की ? अहाँ त कानि रहल छी ? अहाँ की बुझलहुँ जे हम ई सबटा गप्प सत्ते कहि रहल छलहुँ''' हम त मात्र मजाक'' [इन्द्रमाक इ दुनू हाथें उठाए आँखिक नोर कें अपन हाथ सँ पोछैत] नहि इन्द्रमा'' हम आ' अहाँ कहियो नहि अलग हैब'' दुनियाक कोनो शक्ति अहाँकें हमरा सँ छीनि कए नहि ल' जा सकत'' [ई कहैत ओ इन्द्रमा कें अपन छाती सँ लगबैत छथि । एतबहि मे बाहर सँ नारी कंठक हँसीक स्वर सुनल जाइत अछि । ई दुनू चौंकैत पृथक भ' जाइत छथि । इन्द्रमा लज्जा कए पुनः घोघ तानि लैत छथि । अवध किछु क्रुद्ध भए दरबज्जाक दिसि देखैत छथि । तावत् नेपथ्य सँ गीत शुरू भ' जाइत अछि]

कंचन महल मानिक केर दियरा चन्दन लागल केवाड़ हे
बन बाँसक कोहबर ।।
गज दन्तक सेज फूल के बिछौना रतन जतन के सिंगार हे
बन बाँसक कोहबर ।।

ताहि कोहबर सुतय गेला राम दुलहा सीता दुलहिन संग साथ हे
बन बाँसक कोहबर ॥
कमलक मुख-मुख फेरन लागे सीता दुलहिन कर बाम हे
बन बाँसक कोहबर ॥
कमलक मुख-मुख फेरन लागे घुरि फिरि हृदय लगाउ हे
बन बाँसक कोहबर ॥

÷ ÷ ÷ ÷

घुरि सुतू फिरि सुतू सुहबी से कनिया सुहबी तोरे घामे चादर मलीन हे
बन बाँसक कोहबर ॥
भीजै दिय' भीजै दिय' दुलहा से अवध दुलहा एहन सुख कतय पायब हे
बन बाँसक कोहबर ॥

[जावत धरि गीत चलैत अछि, अवध एक बेरि खिड़की लग ठाढ़ इन्द्रमाक लग जाइत छथि आ' एक बेरि केबाड़ीक लग। ई गीत शेष हैबाक संगहि संग ओ बाहर जाइत छथि। संगहि संग हँसीक स्वर नेपथ्य सँ भासल अबैत अछि—स्त्रिगण सभक भागबाक शब्द स्पष्ट सुनल जाइछ। ओ पुनः प्रवेश कए इन्द्रमाक दिसि बढ़ैत छथि] कनिक जे चैन सँ अहाँ सँ गप्प करब, तकर उपाय नहि अछि। एक त गीतहारि बाँकू भैयाक आङ्गन बाली, माने वैह—डुमरवाली भौजी छलीहे''' ताहि पर सँ जुटल छथि हमर छोटकी बहीन आ' और तीन-चारि गोटे''' रहू ने, भोर होमै दियह त हम'''। [अवध कें एत्तेक क्रुद्ध देखि कए इन्द्रमा हँसि दैत छथि – नि शब्द रूपें ; हुनका आँचरि सँ मुँह मुकैबाक चेष्टा करैत देखि अहाँ हँसि रहल छी ? आ' ओसब'''। एहि बेरि आबै दियन्हु ने त हमहुँ भौजी पर गीत गाबै लागब। [ई सुनितहि इन्द्रमाक हँसी बढ़िये जाइत छन्हि।] नहि त ओसब ओना नहि जैतीह ! [हँसैत-हँसैत एकटा कागज पर कि ने लिखि कए इन्द्रमा हुनका दिसि बढ़ा दैत छथि। अवध से ल' कए पढ़ै लगैत छथि। अपनहि मोने पढ़ैत छथि और ओहो हँसि

दैत छथि—] हँ, ठीके गीत चुनलहुँ। भौजीक बौकू भैया त एखन विदेश मे छथिए''' तैं इयैह ठीक रहत—

प्रान पती परदेस गेल हे दुख दै गेल भारी
सासु हमर बड़ दुर्जन हे कहै नीपू ओसारी –

हे, ओहुना ई ठीके भेल अछि – बौकू भैयाक माय हिनका सत्ते खूब खटबितो छन्हि''' [हँसैत]

हम सुकुमारी कठिन अछि रे अहि तरहक भारी
नैहर मे बड़ सुख छल रे छलौं घूमै वजारे
केवल खायब काज छल रे आरो रचब सिंगारे

[अवध एतबा धरि पढ़िए कए हँसि दैत छथि ; इन्द्रमो संगहि हँसैत छथि।] हँ आब भेल। आब आबै ने दियन्हु हुनका लोकनि कें '' [कहैत दरबज्जाक पास जा कए ओ एकबेरि देबार मे कान सटा कए किछु सुनबाक अभिनय करैत छथि। आ तकर बाद उठि कए कहैत छथि—] वाह, आब डरबाक कोनो कारण नहि। ओ सब वयो नहि छथि। भरिसक हमर माये डाँटने छथि। [इन्द्रमाक पास आबि कए हुनका पलंग पर बैसाबैत कहैत छथि—] की ने कहैत छलहुँ अहाँ सँ कनेक देर पहिने ? '' ? मौन नहि पड़ि रहल अछि। खैर, जाय दियह से सब गप्प ! ई कहू--हम देखै मे बूढ़िबक जकाँ त नहि ने लागैत छी एखन ? [इन्द्रमा आश्चर्यित होइत छथि।] अहाँ कें आश्चर्य भ' रहल छै मुदा शहर सँ ऐला सँ पूर्व हमर सबटा मित्र कहने रहथि—'बियाह करै लेल जाय छह ? जा ! मुदा देखिह—चतुर्थीक राति मे अपन कनिया सँ बुधियार जँका बात करिह''' बेसी लोग बौक बनि जाइत अछि, नहि त बेसी बाजै लगैत अछि'। कहू ने''' हम तेहन नहि ने लगैत छी ? [इन्द्रमा माथ डोला कए नकारैत छथि।] हम अहाँकें पसिन्न छी ? [इन्द्रमा लजा जाइत छथि—किछु नहि कहैत छथि।] कहू ने''' अच्छा, ठीक अछि, किछु कहै नहि पड़त। हे ई देखू—हम [अपन रूमाल निकालि कए] एहि

रूमाल कें हे एना क' कए धैलहुँ [शून्य मे खुलल रूमाल क एक कोना धरैत देखबैत छथि इन्द्रमा कें]। जौं हम अहाँ कें पसिन्न छी त ई रूमाल खसा दियह हमरा हाथ सँ। [इन्द्रमा पहिने त किछु ने कहैत छथि, ने करैत छथि। तकर बाद झुकि कए रूमाल ल' लैत छथि अवधक हाथ सँ। ओ झुकितहि अवध हुनका चुम्बन करबाक चेष्टा करैत छथि। मुदा इन्द्रमा अवधक रूमाल सँ अपन मुँह कें झाँपि लैत छथि। अवध इन्द्रमाक माथ कें अपन कन्हा पर रखैत हुनक केस पर हाथ फेरैत छथि किछु काल धरि। तकर बाद इन्द्रमा कें धीरे-धीरे हँटा कए ठाढ़ भ' जाइत छथि और कहैत छथि -] जनैत छी इन्द्रमा''' अहाँ हमरा पहिने भेंटितहुँ''' हमर जीवन मे पहिने अबितहुँ त हमर अतीत हमर वर्त्तमान मुहूर्त्त सन सुन्दर हैतैक, मुदा, असल मे हमहीं तखन अपन विवाहक सब सँ प्रधान बाधा छलहुँ। [एतबाक सुनितहि इन्द्रमा सेहो ठाढ़ भ' जाइत छथि—सप्रश्न दृष्टियें। अवध इन्द्रमाक दिसि देखैत छथि] अहाँ भरिसक जानै चाहैत छी जे कियैक हम से कहि रहल छी। नहि ? [इन्द्रमा माथ डोला कए 'हँ' कहैत छथि।] किशोर सँ जखन युवक भेलहुँ, देह मे यौवनक ज्वार आयल छल। ओहि ज्वार मे हमहूँ आन आन अनेक नाव जकाँ भसिया गेलहुँ। असावधान छलहुँ, तैं। [नेपथ्य सँ एकटा कुमारीक गायन सुनल जाइछ। धीरे-धीरे तकर शब्द बढ़ैत अछि। आ पुनः कम भ' जाइत अछि।] एहि मे हमर दोष त छल, मुदा सब सँ बेसी दोष छल हमर संगी सभक। वैह सब हमरा पापक रास्ता सँ पतनक पाताल धरि ल' गेल छल। [इन्द्रमाक दिसि देखैत। तखन हँ – एतबाक अहाँ कहि सकैत छी जे हमर सब सँ प्रधान अपराध छल ई जे हम एहन सब संगी जुटौने छलहुँ। [किछु काल ओ चुपचाप ठाढ़ रहैत छथि। तकर बाद आगाँ आबि कए आन दिसि मुँह घुरा कए ठाढ़ रहैत छथि। इन्द्रमा सामने आबि कए ठाढ़ होइत छथि। तखन अवध सचेतन भ' जाइत छथि।] दिन मे त स्थिर रहैत छलहुँ। मुदा साँझ होइत देरी भीतर मे

जेना छटपटी लागि जाइत छल। [हँसैत एकरा 'रातिक रोग' कहि सकैत छी। रोज रातिक अंतिम पहर कें घर घुरैत छलहुँ प्रायः बेहोस भ' कए। पीबितो खूब छलहुँ। [इन्द्रमाक दिसि देखैत] की डर भ' रहल अछि पीबाक बात सुनि कए ? [इन्द्रमा मृदु-मृदु हँसैत रहैत छथि, मुदा किछु कहैत नहि छथि।] डरू नहि, एखन हम पीबैत नहि छी। हँसैत] ओ ओही दिन छोड़ि देने छलहुँ, जाहिदिन हमर 'रातिक रोग' हमरा छोड़ि देने छल। [चुप्प भ' कए पदचारण करैत छथि। तकर बाद जेना स्मृति मे डूबि गेल होथि, तेहन स्वर मे कहै लगलाह—] एकराति हम तेहने रोगक शिकार भ' कए शिकारक सन्धान मे बहिरायल छलहुँ। शहरक एक कुख्यात मुहल्ला मे नीक शिकार भेटल छलीह—साधारणतया ओहि-मुहल्ला सब मे एत्तेक सुन्दर निष्पाप मुँह भेंटैत नहि छल। हम स्पष्ट बूझि रहल छलहुँ जे ओ ओहि पथ पर बेसीदिन पहिने नहि आयल छलीह। [एतबाक कहि कए अवध किछु काल चुप्प भ' जाइत छथि। इन्द्रमा अधीर आग्रह नेने हुनक पास आबि कए हुनका धीरे-धीरे छुबैत छथि, मुखभाव मे जिज्ञासा—] तकर बाद की भेल से सुनै चाहैत छी ? तकर बाद रोज राति जकाँ ओतय हम खूब पीलहुँ। एसगरे छलहुँ। कारण, हमर मित्र लोकनि हमरा कुपथ देखा धरि देने छलाह। ओहि पथ पर चलैत काल हम बाद मे आर ककरहु नहि लैत छलहुँ। [हँसैत] इच्छा कामना जं कहू, इयैह छल जे एहि पृथ्वी कें हम एसगरे चीखब, एसगरे उपभोग करब—ताहि मे आर ककरहु अंश कियैक लेमै देब ? [चुप्प रहि कए] तँ ओतहु एसगरे गेल छलहुँ। नशा जखन खूब जमि उठल तखन हम बत्ती मिझा कए ओहि निष्पाप असहाय देह कें ल' कए आदिम खेल खेलै लागि गेलहुँ। एतबा मे बाहर सँ क्यो केबाड़ पर धक्का देलक। हम तमसा गेलहुँ। मुदा सोचलहुँ—ई सब जगह मे त पुलिसक झमेला होइते रहैत छैक। तँ, वैह सब हैत—किछु पाइ खर्च हैत··· इयैह सब सोचैत हम ओकरा कहलहुँ केबाड़ खोलि कए देखै लेल। ओ केबाड़ खोलिये

कए किछु आश्चर्यित भ' कए ककरा सँ ने निम्न स्वर मे बात क रहल छल''' कखनहु कखनहु डाँटियो रहल छल। हम मने मन गोसा रहल छलहुँ। सोचि रहल छलहुँ—जे कोन आफत आबि गेल अछि। उठि कए दरबज्जाक पास गेलहुँ त देखलहुँ ओ एकटा बच्चा कें मारि रहल छल आ' ओ बच्चा बिना कोनो शब्द कैने कानि रहल छल। हम ओतय पहुँचि कए ओकरा सँ ओहि बच्चा दए पूछितहि ओ ओकरा भगा देमै चाहैत छल। मुदा मारि खा कए ओ तखन पड़ल कनैत छल- जा नहि रहल छल। हमरा जे कहियो नहि होइत छल— सैह भेल ओहि बच्चा पर दया आबि गेल आ' हम ओकरा घरक भीतर ल' अनलहुँ। डंटैत ओकरा सँ पूछल जे एना ओ कियैक कैलक। तकर बाद पता चलल ज ओ ओकरहि बेटा छल। आरो बहुत किछु पता चलल जकर बाद अपना पर घृणा भ' गेल छल। पता चलल जे ओकर पति मृत्युशय्या पर पड़ल छलैक। आ ओकर सन्तान सब पड़ल छल भूखल। घरक लक्ष्मी एम्हर अन्नसंधानक लेल रोज राति अपन देह कें बन्हकी रखैत छलीह हमरासब सन कामुक धनिक यथेच्छाचारी लोगक पास। [इन्द्रमा आश्चर्यित हैबाक अभिनय करैत छथि।] आश्चर्य भ रहल छी? मुदा ई सत्य थिक। संसार मे अहिना होइत अछि। हमरा सभक आँखिक आगाँ सँ जखन रंगीन पर्दा अपनहि हँटि जाइत अछि— तखन हमसब पर्दाक ओहि दिसि राखल दीर्घ ऐना मे अपना सबकें देखि कए चौंकि उठैत छी, सिहरि उठैत छी। अपन असल स्वरूपक पता तखनहि चलैत अछि। ओहि लक्ष्मीक पति कारखानाक एक मशीन तर दूनू हाथ क बलिदान देने छल। मुदा मालिक कोर्ट मे प्रमाण क' देने छलाह जे एहि मे ओकरे दोस छल। तैं ओकरा नहि भेटल कोनो क्षतिपूरण आ' ने भेल छलैक चिकित्सोक व्यवस्था। लक्ष्मीक भंडार मे जे किछु छलन्हि, से सबटा खर्च भ' गेल छलन्हि चिकित्से मे। मुदा आमदनी आब किछु नहि होइत छलन्हि। अंत मे दारिद्रय आ भूख लोग कें जे ने कराबै। गृहिणी गृह सँ बजार मे

बिकै लेल पहुँचि गेल छलीह। जनैत छी ओ बच्चा की कहै लेल आयल छल ? ओ ओहि लक्ष्मीकें दूटा संवाद देमै आयल छल— एक— सब भाइ-बहीन कें खूब भूख लागल छलैक ; दूइ— परिवारक ऊपर सँ और एकटा बोझ उतरि गेल छल'''ओकरा सभक पिताक देहान्त भ' गेल छलैक। [चुप्प रहैत छथि। नेपथ्य सँ एकटा नारी कंठक हृकन्न कनबाक आवाज आबि रहल छल।] ओ कानि रहल छलीह अपनहु ओकर बच्चा चुप्प भ' कए ओकर मायक कानब देखि रहल छल, आ हम ? हम अनुतापक आगि मे जरि रहल छलहुँ। [चुप्प रहैत अपन आँखि मे आयल नोर कें पोछि लैत छथि।] ताहि दिन सँ हम प्रायश्चित्त शुरू कैलहुँ और आइ अहाँकें पाबि कए हम अपना कें, अपन प्रायश्चित्त कें, ओहि दिन सँ शुरू भेल सुन्दरक लेल अपन आराधना कें सार्थक बुझैत छी। इन्द्रमा, अहाँ सबदिन हमरहि रहब ने ?''' हमरा पास''' एत्तेक पास ? [कहैत इन्द्रमा कें अपना दिसि आकृष्ट करैत कथि। हमरा छोड़ि त नहि देब कहियो हमर आराधना क आधे पथ मे ? [इन्द्रमा माथ डोलबैत अपना कें समर्पण करैत छथि अवधक हृदय मे।] इन्द्रमाक माथ पर हाथ फेरैत अवध कहैत छथि—] अहिना सब दिन अहाँकें''' हमर घरक लक्ष्मी कें जौं हम अपन जिनगीक सन्दूक मे बन्द क' कए राखि सकौं, त हम कहियो—[एतबा मे बाहरक दरबज्जा मे खटखट शब्द होइत अछि। आश्चयित भए दुनू पृथक भ' जाइत छथि।] के भ' सकैत अछि एत्तेक राति कें ? भौजी आर त नहिये हैतीह एखन।

अशोक—[नेपथ्य सँ पुनः दरबाजा पर कराघात करैत भैया ! भैया !!

अवध—[स्वगत] अवध ? एखन ?? की बात थिकैक ? [दरबाजा खोलैत]
की बात थिकैक अशोक ? की भेल अछि ?

अशोक— सर्वनाश भेल अछि भैया। [अशोक ई कहैत भीतर अबैत अछि।]

अवध— मुदा भेल की अछि, से कहबह तखन ने !

अशोक—हमरा सबकें ''हमरा सभक सब किछु—सबटा इज्जति लूटि लेलक ओसब'''

अवध—[अधीर भ' कए] की भेल अछि से कहब ने !

अशोक—हमरा सबकें मकरन्दपुर बला सब खूब ठगि लेलक अछि'''

अवध—मकरन्दपुर बला सब ? माने [पत्नीकें देखा कए] माने हिनक नैहरक लोगसब'''

अशोक—अहाँ एखनहुँ से बुझलहुँ नहि भैया जे ओसब केहन डाइन क हाथ कें अहाँक हाथ मे धरा देलक अछि ?

अवध—[गरजैत] अशोक ! की कहैत छह ? ई तोहर भौजी छथुन्ह ! हिनका विषय मे एहन अपशब्द बजबा सँ पहिने

अशोक—अपशब्द ? एकरा अहाँ अपशब्द कहैत छी भैया ? और ओहि सुन्दर मुखक अढ़ मे को अछि से जनैत नहि छी ?

अवध—थम्हह ! की भेल छन्हि हुनक मुख मे ? [एलबाक कहैत बात हैत-हैत घोघ कें नमरा कए इन्द्रमा खिड़कीक पास आ' कए पाछाँ घुरि कए ठाढ़ भ' जाइत छथि ।]

अशोक—हूँ--सैह पुछू भैया जे की नहि भेल अछि । अहाँ जनिका लक्ष्मी बुझैत छियन्हि '' ओ '' हुनक मुँह मे भाषा नहि छन्हि''' ओ बौक छथि

अवध—[अत्यन्त आश्चर्यित भए] की ?

अशोक—हूँ भैया, हूँ'''एखनहि पता चलल ई बात। पूरन भैयाक सार आयल छथि '' सैह कहने छथि '' ओहो मकरन्दपुरक लगेपासक छथि। [अवध कें चुप्प देखि] भैया ! चुप्प कियैक छी''' आबहु नहि बुझि रहल छी जे कियैक एत्तेक धूमधाम आ' खर्च कैने छलाह ओसब ? बियाहक दिन स्थिर करबा मे हड़बड़ी दए मोन नहि अछि ? किछु पड़ि रहल अछि

मौन ? आब त हम सबटा बुझैत छी। हमहूँ सब नहि छोड़बन्हि। भोरे एहि डाइन कें मकरन्दपुर भगैबाक सबटा बन्दोबस्त कैनहि छी''' हुनका सबकें नीक जँका बुझा देबाक चाहियन्हि जे हमरा सबकें अपमान हजम करबाक आदति नहि अछि। हमहूँ सब बदला लेमै जनैत छी। कालिहये [एतबा मे कनैत कनैत इन्द्रमा थरथरबै लगैत छथि, हुनक घोघ उतरि जाइत छन्हि आ' ओ पाछाँ घुरि कए अवध दिसि देखैत और कनै लगैत छथि।] बस-बस, बहुत भेल!''' हम सबटा चालाकी बुझैत छी''' ओ सब ढोंग-ढरनच और अभिनय एतय नहि चलत।

अवध—[डाँटैत] अशोक !!! अपन जबान कें रोकह''' हमरा सामने हमर स्त्रीक विषय मे अभद्र जकाँ बात करबाक अधिकार तोरा के देलकह ?

अशोक—[आहत स्वर मे] भैया !!! ई अहाँ की कहैत छी ? ई''' ई बौक छथि''' हिनका बजबाक शक्ति नहि छन्हि''' हिनका लेल अहाँ'''

अवध—हूँ-हूँ''' हिनका लेल हम दुनियाक सबटा वस्तुक उपेक्षा क' सकैत छियन्हि [निम्न स्वर मे] किछुओ छोड़ि सकैत छी हिनका लेल''' [अवधक ई बात सुनितहि इन्द्रमा अश्रुपूर्ण नयनें हुनकहि दिसि देखैत छथि। अवध आगाँ बढ़ि कए इन्द्रमाक हाथ कें अपना हाथ मे ल' कए कहैत छथि] ई त हमर लक्ष्मी छथि''' हमर ध्रुव नक्षत्र'''। [कहैत इन्द्रमाक नोर कें पोंछि दैत छथि]

अशोक—तकर माने ? अहाँ हिनका नहि द' आबै देबन्हि'''

अवध—[पाछाँ बिना घुरनहि] असम्भव ! ई हमर छथि आ' हमरहि रहतीह''' जतय हम रहब ओतय ! [इन्द्रमा आनन्द सँ आप्लुत होइत अवधक हृदय पर माथ धरैत छथि।] अशोक ! तों कहैत छह ओ बाजि नहि सकैत छथि। तों जनैत नहि छह अशोक''' आइ राति भरि त वैह बजलीह''' से भाषा तों नहि बुझबह'''

अशोक — किन्तु··· ?

अवध — किन्तु किछ् नहि! हमर जिनगी में 'किन्तुक' कोनो स्थान नहि अछि। और तों जाह् अशोक··· एहि चतुर्थीक राति मे और ककरहु नहि चाहै छी ·· आकास मे एकटा चन्द्रमा कें त देखिते छी, डाह सँ जरैत अछि भरिराति··· ओकरा जरै दहक।

[अशोक प्रस्थानोद्यत होइत छथि आ' बत्ती मिभा जाइत अछि।]

—:o:—

ओ कागज केर बाघ छथि

पात्र-परिचय

राजा —विशाल मुख; उन्नत ललाट; चलैत-फिरैत छथि कम्मे; देहो हिनकर विराटे छन्हि।

मंत्री —दुब्बर-पातर शरीर; आँखि मे धूर्त्ताक चेन्ह; सर्वदा तोत-राबैत छथि—मुदा स्टैटिस्टिक्सक वर्णन करैत काल नहि।

महेश राय —मैथिली रंगमंचक अभिनेता; गलाक स्वर गम्भीर; विनय सँ जतबाक झुकि सकैत छथि, क्रोध मे ततबहि उद्धत भ' सकैत छथि; आँखि मे चश्मा पहिरैत छथि।

ब्रह्मानन्द मिसर—रंगमंचक वाद्यनिर्देशक; नाटे छथि; मध्यवयस्क; मुख मे एकटा परिपुष्ट मोछ कें छोड़ि आर किछु नजरि मे पड़ैबला नहि; बाजैत काल हाथ मे हाथ धए घसब हिनकर बहुत दिनक आदति छन्हि।

विष्णु प्रभा —रंगमंचक अभिनेत्री; सुन्दरी, दीर्घांगी; विशालाक्षी; हिनकर रूप कें देखि कए सहजहि लोगक सभ्यता आ ध्रमान डोलि सकैत अछि।

घोषक — राजाक घोषक छथि—व्यक्तित्वहीन एक गोट मनुक्ख।

नाट्य-आन्दोलनक समर्थकगण; अन्यान्य अभिनेता।

—:o:—

व्यवस्थादि

मंचसज्जा क कोनो प्रयोजन नहि पड़त एहि पथ-नाटक वा 'स्ट्रीट-प्ले' मे। पथ, घर, बाहर कत्तहु ई खेलल जा' सकैत अछि।

राजाक लेल जौं एकटा झोलंगा आ एकटा छोटेछीन मुकुट क व्यवस्था भ' सकै त नीक। राजा कुर्त्ता-पैजामे पर झोलंगा आ' मुकुट पहिरताह। से नहियो पहिरि कए ओ अभिनय क' सकैत छथि।

आन-आन पात्रक लेल परिधानक कोनो रूप स्थिर-निश्चित करबाक प्रयोजन नहि अछि। तखन पुरुष पात्र सब धोती-कुर्त्ता अथवा कुर्त्ता-पाजामा पहिरथि त नीक। ई एकांकी व्यवस्था आ' तकर तानाशाही मनोवृत्तिक विरुद्ध लिखल गेल अछि। प्रयोजन पड़ला पर निर्देशक और किछु मांग कें एहि मे सम्मिलित क' सकैत छथि, किछु बदलियो सकैत छथि। कारण ई क्रिया-सचेतन नाटक थिकैक। नाटकक अभिनये धरि ई सन्तुष्ट नहि रहि नाटकक माध्यम सँ दर्शक कें वक्तव्यक अनुरूप कार्य मे प्रेरित, उद्‌बुद्ध आ उत्साहित करबाक चेष्टा करैत अछि। एहि पथ-नाटकक सार्थकताक लेल चरित्रक अंगसज्जा आ आवृत्ति आदि सब किछु बदलबा मे निर्देशककें पूर्ण स्वाधीनता देब उचित बुझैत छी। एकर रचना भेल छल सरकार द्वारा नाट्याभिनय पर लगाओल गेल विशेष कर क प्रतिवाद-स्वरूप।

—:o:—

ओ कागज केर बाघ छथि

घोषक —[एकटा टुटलका ढोल पिटैत घोल करैत छथि] सावधान-सावधान-सावधान !!! चारूकात, नहि-नहि, तीनोकात समुद्रक उन्मत्त प्रहरा सँ परिवेष्टित, हिमालयक उच्चता सँ संरक्षित, सुजला-सुफला-शस्यश्यामला एहि जम्बूद्वीपक अधीश्वर श्रीश्री श्रीयुक्त महामहिम श्री इन्द्रकान्त सिंह, एम० ए०, पी-एच० डी० (लंडन), एल-एल० डी० (वाशिंटन), डी० एस-सी० (मास्को), रायबहादुर, भारतगौरव और और 'गरीब कें भगाबह' नाराक जन्मदाता पधारि रहल छथि······

[एतबाक कहैत ढोल पीटब बन्द क' कए ओ अपन पीठ कें आसन जकाँ बना कए मूड़ी गोंतने बैसि जाइत छथि। राजा आ' मंत्री प्रविष्ट होइत छथि। मंत्री राजाक अलखल्ला क प्रलंबित अंश कें पाछा दिसि सँ धरैत अबैत छथि। राजा घोषकासन क पास आबि कए ठाढ़ होइत छथि।]

मंत्री —महाराजक जय हो !

घोषक —[एक बेरिक लेल मूड़ी उठा कए] महाराजक जय हो !

राजा —[दूनू हाथ उठा कए आश्वासन देबाक अभिनय करैत छथि। राजाक एक हाथ मे छड़ी छन्हि। ओहि छड़ी कें ओ घोषकक हाथक अंगुरिक मध्य स्थापित क' कए चारू कात देखै लगैत छथि। घोषक ओहि छड़ी कें सोझ क' कए धैने रहैत छथि। तकर बाद राजा घोषकक पीठक आसन पर बैसैत छथि। मंत्री क इंगित करैत देरी ओ अपन ठेंगहुन पर बैसैत छथि।] मंत्री !

मंत्री —महाराज !

राजा —आजुक सभा मे त अनेक विचार-प्रार्थी कें देखैत छियन्हि। देश सँ की हमर आज्ञाक अनुसार सब गरीब कें हटाओल नहि गेल अछि ?

मंत्री—से त फैल गेल अछि महाराज !! इयैह देखैत ने जाउ—गत वर्षक परि-संख्यान त कहैत अछि पथ-दुर्घटना मे दू हजार, खाद्य मे मिलावट सँ तीन हजार, राजनीतिक गोलमालक नाम पर चारि हजार, गुंडागर्दी क' कए पाँच हजार, दाहीक सृष्टि कए पनरह हजार, अनावृष्टिक आवाहन क' कए बीस हजार, अनाज कें गुदाम मे नुका कए दाम बढ़ा कए पच्चीस हजार, खुदरा दस हजार और समाजवादक मंत्र पढ़ि कए कत्तेको—करोड़क करोड़ गरीब कें हँटाओल गेल अछि। तैयहु ई जे सब टिकल छथि, तनिको सबकें हँटैबाक प्रयास चलि रहल छन्हि।

राजा—अहाँक बताओल हिसाब सुनि अत्यन्त प्रसन्न भेलहुँ। मुदा तखन एत्तेक भीड़ कियैक ?

मंत्री—महाराज ! लोगक मांगक की आइकाल्हि शेष छैक ? ई सब महासुख सँ जिनगी बिता रहल छथि। किन्तु बंगदेश मे कहैत नहि छैक—सुखे थाकते भूते किलोय यानी बेसी सुख सेहो उछन्नरियेक कारण। सैह पैर भेल अछि। एकरा सब पर मांगक भूत सवार छैक।

राजा—एखन हमरा की करबाक चाही ?

मंत्री—महाराज हिनका सभक मांग कें सुनथिन्ह।

राजा—मुदा, जानितहि छी जे बड़ कोमल अछि हमर हृदय, ललिते राग पर गीत गबैत अछि हमर मन—जौं हिनका सभक मांग सुनि कए हमरा दया आबि जाइक··· जौं हम सबटा मानि ली—तखन ?

मंत्री—ताहि लेल निश्चिन्त रहल जाउ। हम जा धरि छी, ता धरि कोनो मांगक पूर्ति नहि हैत। हँ, हृदय मे बेसी दया आबै त आश्वासन द' देल जैतैक।

राजा—उत्तम। तखन बजाओल जाय हुनका लोकनिक नेता सब कें।

[कहैत राजा आसन पर सँ उठि कए पदचारणा करै लगैत छथि। घोषक ठाढ़ भ' कए दुनू हाथ सँ मुँह कें झाँपैत विचित्र स्वरें चीत्कार करैत छथि।]

घोषक—मैथिली रंगमंचक नेता लोकनि : हाजि-इ-इ-इ-इ-र !!

[महेश राय आ' ब्रह्मानन्द मिसर प्रविष्ट होइत छथि एवं राजा कें अभिवादन करैत ठाढ़ भ' जाइत छथि। घोषक पुनः पहिलुके जकाँ राजाक आसन बनि जाइत छथि।]

राजा—[अभिवादनक उत्तर मे हुनका दुनूक प्रति हाथ उठा कए पुनः पहिलुके जकाँ पदचारणा करै लगैत छथि। किछु काल सब क्यो चुप रहैत छथि। एक बेरि थम्हैत राजा कहैत छथि] कहू ! अहाँ लोकनि की चाहैत छी ?

महेश
ब्रह्मानन्द } —सुविचार, न्याय !!!

मंत्री—एतय विचार 'सु'ए होइत छैक। कथीक न्याय चाहैत छी—से कहल जाउ !!

महेश—महाराज ! मैथिली, रंगमच और अन्यान्य विषय मे जे अन्याय भ' रहल छैक—तकर हम सब न्याय चाहैत छी।

राजा—अहू सब विषय मे अन्याय भ' रहल अछि ? से कोना?

ब्रह्मानन्द—हमरा सभक भाषा क अनादर कैल जा रहल अछि—हमरा सभक एतोक प्राचीन साहित्यिक और सांस्कृतिक इतिहास क उपेक्षा कैल जा रहल अछि।

महेश—हमरा सभक भाषा आ' संस्कृति क अपमान कैल जा रहल अछि जखन कि एकर बजनिहार कम सँ कम अढ़ाइ कोटि लोग छथि।

ब्रह्मानन्द—मुदा जाहि भाषाक भाषी मात्र दस लाख, जाहि भाषाक इतिहास मात्र दू-एक सय वर्षक—तकरो सब सँ एहन व्यवहार नहि कैल जा रहल अछि।

मंत्री—एहन कियैक कैल जा रहल अछि ?

महेश—हम त इयैह कहब जे हमसब कहियहु हिंसाक पथ नहि धैलहुँ, कहियहु देशक अर्थव्यवस्था पर आघात नहि कैलहुँ, हड़ताल, घेराव, तोड़-फोड़ करैत दृष्टि आकर्षित करबाक चेष्टा नहि कैलहुँ, तैं—

ब्रह्मानन्द—हमसब सरकार कें सदा सहयोग दैत रहलहुँ; पूर्ण विश्वास कैलहुँ, अपन मांगक लेल आन्दोलन नहि कैलहुँ—तैं !

मंत्री—खामो-ओ-ओ-श् !!! बेअदब !

महेश—हमसब अपन मांग दय साफ-साफ बजलहुँ। कोनो अन्याय त नहि कैलहुँ।

मंत्री—अन्याय नहि कैलहुँ ? एखनहि नहि कहलहुँ जे सरकार पर आब आस्था नहि अछि ?

ब्रह्मानन्द—कोना रहत आस्था ? महाराज जखन सिंहासन पर बैसल रहथि, तखनहि स्वाधीनता आ' सभक समान अधिकारक घोषणा कैने रहथि—आइ सँ तीस साल पहिनहि। मुदा, एखन धरि हमर भाषा आ' हमर प्रान्तक लेल ओ किछु नहि कैलन्हि।

राजा—[मंत्री कठिन स्वरें किछु कहै चाहैत छलाह; मुदा राजा हुनका हाथ उठा कए शान्त रहबाक इङ्गित करैत कहैत छथि। उत्तेजित जुनि होउ! उत्तेजित हैबाक कोनो कारण नहि। अहाँसब कनेक सोचि-बिचारि कए देखू ! अहाँसब सँ बड़ जेसब भाषा प्रान्त अछि, ओसब अहाँसब सँ पहिने सम्मान आ' अनुदानक दावा क' सकैत अछि। क' सकैत अछि कि नहि ? तैं ओकरा सबकें सबसँ पहिने देखै पड़ल।

महेश—बेस। मुदा हमरा सबसँ कम बजनिहार, कम प्राचीन आ' कम साहित्य रहितहु किछु भाषाकें कियैक स्वीकृति देल गेल छैक ?

राजा—सैह त कहैत छलहुँ ! अहाँ सँ जे क्यो बड़ अछि तकर सम्मान त पहिने हैबे करत। और अहाँ सँ छोट जे अछि... इयैह ध' लियह, अहाँक छोट-छोट भाइ बहिन सब—अहाँ कि ई नहि चाहब जे ओकरे सबकें आदर भेटैक सब सँ पहिने ? कहू—अपनहि कहू ! तैं ओहिसब भाषाक पुष्टिक लेल ओकरा सबकें स्वीकृति देल गेल छैक। [स्वर कें अधिकतर कोमल क' कए] कथी लेल ईसब झूठ-झमेला करैत छी...? ...ताहि सँ लियह, ई लेमनचूस लियह... ! [राजा आपन दुनू पाकिट सँ दू टा

लेमनचूस निकालि कए महेश आ' ब्रह्मानन्दक हाथ मे धरा दैत छथि।]

[महेश एक दू बेरि लेमनचूस कें चोभैत छथि। हुनक मुखभाव बदलि जाइत छन्हि... ओ एहि लेमनचूस कें मुँह सँ निकालि कए संदेहक दृष्टियें देखैत छथि। ब्रह्मानन्द महेशक हाथ सँ लेमनचूस छीनि लैत छथि।]

ब्रह्मानन्द—[राजा आ' मंत्री नहि सुनथि तेना क' कए] ई की क' रहल छी ? ई ओ लोभ थिकैक जे मनुष्य कें दुर्बल, अलस, आन्दोलन-विमुख क' दैत अछि। एहि सँ लोगक मनुष्यत्व हेरा जाइछ। हमरा सभक पूरा-पूरी मांग सुनाबियौक। कहू त... आ ई सब... [कहैत दुनू लेमनचूस कें दूर फेंकि दैत छथि।]

महेश—[ब्रह्मानन्द सँ] ठीके कहलहुँ यौ ! [राजा सँ, उच्च स्वरें] महाराज !

राजा—[लेमनचूस चोभैत-चोभैत आश्चर्य-चकित भए] फेर की भेल ?

महेश—अहाँ जँ हमरा सभक लेल किछु करै नहि चाही, त हजारो टा बहाना बना सकैत छी—एतबा त एहि दीर्घ समय मे हमसब बुझिये गेल छी।

मंत्री—सावधान, बेअदब ! राजाक संग प्रजा कत्तहु एना बाजय ?

राजा—आह, मंत्री ! अहाँ बात-बात पर एना डराबियन्हु नहि हिनका लोकनि कें। कहै ने दियन्हु हिनका सबकें जे किछु कहै चाहैत छथि। अरे, इयैह सब त हमर सिंहासनक पौआ छथि। पौआ कें क्यो कखनहु काटि कए बाद द' सकैत अछि ?

मंत्री—[राजाक पास आबि कए निम्नस्वरें] जखन कोनो पौआ मे दीमक क बास होमै लागैत छैक तखनहि तकरा नहि काटि कए फेंकने मोसकिल होइत छैक, महाराज !

राजा—[निम्न स्वर मे] अहाँ चिन्ता जुनि करू मंत्री—हमहूँ राजनीति जनैत छी। [उच्चस्वरें] कहू— अहाँ सभक आर की मांग अछि ?

ब्रह्मानन्द—हमसब आइ अनेको वर्ष सँ नाट्यशास्त्रक चर्चा, अध्ययन और तपस्या करैत अयलहुँ अछि।

राजा—अति उत्तम काज कैलहुँ। देश एहि दिशा मे अहाँ लोकनिक प्रगतिक

लेल गर्व अनुभव करैत अछि।

महेश—मुदा नाट्यशास्त्रक लेल एत्तेक श्रम, एत्तेक तपस्या भरिसक व्यर्थ भ' जायत।

राजा—कियैक ?

महेश—हमरा सबके' राष्ट्र सँ जे सहायता भेंटबाक चाही—से त भेंटते नहि अछि···

ब्रह्मानन्द—आ' ताहि पर सँ अहाँक राज्यक प्रशासक लोकनि एक सँ एक कर लगा रहल छथि। ···लगातार कर पर कर। मनोरंजनक कर, पुलिस-व्यवस्था कर, आय कर, ई कर ओ कर!

राजा—से की ?

ब्रह्मानन्द—अत्याचार बढ़ि रहल अछि हमरा सभक आश्रम पर। भरतक जत्तेक शिष्य एहि जम्बूद्वीप मे नाट्यशास्त्र-चर्चाक आश्रम खोलने रहथि, जत्तेक सहस्त्र नाट्य-प्रेमी एहि यज्ञ के' सार्थक बनैबाक लेल अपन जिनगीक दान देने छथि—से सबटा एहि प्रशासनिक आघात सँ रक्ताक्त... आहत, आ' व्याकुल भ' रहल छथि।

महेश—जतय हमरा सबकें प्रोत्साहन भेंटबाक चाही, ततय भेंटि रहल अछि असम्मान, अविचार एवं आर्थिक दबाव।

ब्रह्मानन्द—और एहि मे और बेसी मारल जा रहल अछि हमरासब सन छोट छीन संघ-आश्रम सब!

मंत्री—नाटक क लेल तपस्याक कोन प्रयोजन अछि ? नाटक माने त नकली राजा आ रानीक प्रेमकथा··· दानवक अत्याचार··· रानीक हरण··· महायुद्ध··· और अंत मे मिलन—मुदा सबटा नकलीए। त एहि लेल शास्त्र क कोन प्रयोजन आ' तपस्येक कोन आवश्यकता ?

महेश—से अहाँक बुद्धिक बाहरक गप थिक महामंत्री! मंत्री हैबाक लेल अहाँके' राजाक तरबे टा चाटै पड़ल कि नहि—तपस्या त नहिये करैं पड़ल!

मंत्री—की ? हमर एहन अपमान ? महाराज !!!

[एतबा मे घुंघरूक शब्द भासल अबैत अछि। पैर मे घुंघरू बान्हि कए विष्णुप्रभा धीरे-धीरे अबैत छथि। महाराजक संगहि संग सभक दृष्टि ओहि दिसि चलि जाइत छन्हि। महाराज स्पष्टतः लालची आ' लोभी भ' उठैत छथि विष्णुप्रभा कें देखि कए।]

राजा—के छथि ई सुन्दरी ?

ब्रह्मानन्द—ई छथि विष्णुप्रभा··· हमरा सभक तपस्याक एक शक्ति··· हमरे सभक संग अभिनय करैत छथि — शास्त्राध्ययन सेहो करै छथि···

राजा—विष्णुप्रभा··· वाह··· जेहन सुन्नर नाम, तेहने ··। [मंत्री सँ] मंत्री ! आबो अहाँ कहब जे नाटकक लेल तपस्याक कोनो प्रयोजन नहि अछि—एहन तपस्विनी कें देखियहु कए···? [मंत्री राजाक अभिप्राय कें बुझैत माथ झुका लैत छथि।] हँ, अहाँसब कि ने कहैत छलहुँ आर्थिक दबाव छय ? ओ हँ, अहाँसभकें आर्थिक सहायता भेटबाक चाही—सैह ने ? ऐं ? बेस-बेस ! अहाँ सभक प्रस्ताव पर हम विचार करब आ' भरिसक एहि विषय मे किछु ने किछु क' सकब से उमेद अछि—तें कोनो दुश्चिन्ता नहि करू।

महेश—
ब्रह्मानन्द— } महाराजक जय हो ! ! !

मंत्री—महाराज अहाँसभक मांगक पूर्त्तिक विषय मे कोना की कैल जाय से अवश्य सोचताह ! मुदा··· ताहि लेल··· अहूँ सबकें···

महेश—मुदा की ? कहू हमरा सबकें की करै पड़त ?

ब्रह्मानन्द—हमसब किछु क' सकैत छी—

राजा—किछु नहि, किछु नहि—विशेष किछु नहि। बस, हमरा अहाँसभक विश्वास चाही, आनुगत्य चाही, प्रेम चाही··· और बस, हमरा विष्णु-प्रभा कें चाही···

महेश—हमरा सभक विश्वास, आदर्श, अनुगति, इज्जति—सभक प्रतीक

छथि विष्णुप्रभा...

ब्रह्मानन्द—हमसब अपन समस्त शिक्षा आ' ज्ञान विष्णुप्रभा कें सौंपि देने छियन्हि।

महेश— हमरा सभक नाट्यचर्चाक प्रेरणा छथि विष्णुप्रभा।

ब्रह्मानन्द—हमसब अपन विश्वास, आनुगत्य आ' सम्मान अहाँकें उपहार द' रहल छी... मुदा तकर बदला मे अहाँ सँ सुविचार, न्याय आ उत्साहक आशा करैत छी।

[ब्रह्मानन्द विष्णुप्रभाक हाथ ध' कए आगाँ बढ़ैत छथि। महेश राजाक हाथ ध' कए विष्णुप्रभाक दिसि बढ़ैत छथि। विष्णुप्रभाक हाथ राजाक हाथ मे देल जाइत छन्हि। घोषक ठाढ़ भ' कए छुच्छे दुनू हाथ कें जोड़ि कए तीन बेरि शंखनाद करैत छथि। तकर बाद पुनः ढोल पीटै लगैत छथि। धीरे-धीरे ढोलकक शब्द मद्धिम भ' जाइत अछि। मंच सँ मंत्री, महेश, ब्रह्मानन्द आ' घोषक निष्क्रान्त भ' जाइत छथि। मात्र राजा आ' विष्णुप्रभा प्रस्तरीभूत भए ठाढ़ रहैत छथि— यावत् धरि ने मंच शून्य होइत अछि। मंच शून्य हैबाक पश्चात् पुनः वार्ता शुरू होइछ।]

विष्णुप्रभा—हमसब एकत्र भेलहुँ—तकरहु त आब बहुत दिन बीति गेल अछि।

राजा—से त ठीके!

विष्णुप्रभा—मुदा अहाँ आपन वचन नहि राखलहुँ एखन धरि!!

राजा—से कोना?

विष्णुप्रभा—जे सब तपस्वी आपन भाषा—आपन मायक सम्मानक लेल प्राणपात क' रहल छथि, जेसब न्यायशास्त्रक चर्चा, अध्ययन तथा प्रगतिक लेल तप क' रहल छथि—ओसब अहाँ पर बड़ भरोस क' कए हमरा उपहार देने रहथि।

राजा—सत्ये!

विष्णुप्रभा—मुदा अहाँ हुनका सभक एहि विश्वास आ' आनुगत्यक योग्य किछु नहि कैलियन्हि!

राजा—हम त हुनका सबके आश्वासन देने छियन्हि।

विष्णुप्रभा—आश्वासने टा सँ लोगक पेट नहि भरैत छैक।

राजा—देखैत छी राजाक सान्निध्य, रानीक सम्मान आ' राजसुख अहाँके कनेको बदलि नहि सकल अछि।

विष्णुप्रभा—हम राजसुखक लेल नहि, आपन तपस्याक अंगक रूप मे अहाँक सेवा कैलहुँ अछि।

राजा—नारीक जन्मे होइत छैक सेवा करबाक लेल।

विष्णुप्रभा—और पुरुष ? जे अहाँक प्रजा छथि...?

राजा—प्रजाक जन्म होइत अछि राजाक हुकुम कें स्वीकार करबाक लेल... राजाक हाथ कें सक्कत करबाक लेल... देशाक युद्ध मे वलिदान देबाक लेल... और प्रयोजन पड़ला पर राजकोष कें समृद्ध करबाक लेल...

विष्णुप्रभा—और तकर बदला मे ओकरा भेंटतक अत्याचार, अराजकता, पराधीनता आ आर्थिक शोषण.. ... नहि ?

राजा—खामोश !!! देखैत छी, अहाँक साहस दिनोदिन बढ़ले जा रहल अछि ?

विष्णुप्रभा—सुनू महाराज ! हम अहाँक सहधर्मिणी छी... सहयोगिनी छी... दासी नहि। और हम ई कहियहु नहि बिसरि सकैत छी जे हम कतय सँ आबि रहल छी...

राजा—[विष्णुप्रभा कें धकेलि कए खसा दैत छथि नीचाँ] दूर भ' जाउ हमर सामने सँ...हम अहाँक मुखदर्शन धरि नहि करै चाहैत छी... हमरा लेल सबसँ प्रधान वस्तु थिक हमर शक्ति, हमर क्षमता... हमर सिंहासन...

विष्णुप्रभा—[ठाढ़ होइत] और हमरा लेल सबसँ प्रधान वस्तु थिक हमर देश, हमर देसकोसक लोग, हमर आन्दोलन... [कहैत तीव्रगतियें मंच सँ निष्क्रान्त भ' जाइत छथि]

राजा—[क्रोध सँ काँपैत] मंत्री ! मंत्री !!!

मंत्री—[त्वरित गतियें प्रविष्ट होइत] महाराज !

राजा—सुनू मंत्री... आइये घोषणा क' दियह समस्त देश मे जे सात दिनक

भीतर जँ तपोवन सँ समस्त तपस्वी ज्ञानार्जनक ढोंग रचब छोड़ि अपन-अपन घर नहि घुरथि, त समस्त तपोवन कें जरा कए भसम क' देल जैतैक······

घोषक—[नेपथ्य मे घोषक ढोल पीटै लगैत छथि। राजा और मंत्री प्रस्तरीभूत भ' जाइत छथि। घोषक घोषणा करैत छथि।] सुनू, सुनू देशाकोसक लोग... आजुक बाद सँ अर्थशास्त्र, अनर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, अधर्मशास्त्र दुर्नीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, गणितशास्त्र वा अन्य शास्त्र—कोनो शास्त्रक अध्ययन-अध्यापन नहि है-ए-ए-ए-ए-ए-एत ! और सुनू देशक लोगसब... आजुक बाद सँ नाट्यशास्त्रक रचना, अध्ययन और परिशीलन मे जेसब लागल रहताह—ओ सब राजरोषक आगि मे झरकाओल जैताह। सात दिनक भीतर जँ ज्ञानक समस्त शृंखला नहि टूटै, समस्त देश मे जँ विशृंखलाक जन्म नहि होइक, समस्त आन्दोलन आ' धरना जँ टूटि कए छिन्न-विच्छिन्न नहि भ' जाय—त समस्त प्रजा कें भीषण शास्ति सहै पड़तै-ए-ए-ए-ए-क ! [पुनः ढोल बजबैत ओ शान्त होइत छथि।]

[अकस्मात् दूर सँ कोलाहलक शब्द सुनल जाइत अछि। राजा आ' मंत्री दुनू चौंकैत छथि। लाठी हाथ मे नेने पाँच-दस गोट लोग प्रविष्ट होइत छथि। ओहि मे सबसँ आगा विष्णुप्रभा, महेश आ' ब्रह्मानन्द देखल जाइत छथि। ओसब आबि कए राजाक सामने ठाढ़ भ' जाइत छथि। राजा आ' मंत्री दुनू भीत हैबाक अभिनय करैत छथि।]

राजा—की बात थिकैक ?

मंत्री—क्-कें च्-छी अहाँसब ?

महेश—हमसब सबदिन सँ महाराजक आज्ञाक पालन कैने अयलहुँ आ' सैह आइयहु क' रहल···

राजा—ह-हमर आज्ञा ? ह-ह-हमर कोन आज्ञा ? हम त कोनो आज्ञा-ताज्ञा नहि···

ब्रह्मानन्द—हमसब आब कोनो शास्त्रक अध्ययन, अर्जन आ' वर्द्धन मे प्राणदान नहि करै चाहैत छी।

महेश—हमसब आब बुझि गेल छी जे अधिकार शक्तिये सँ अबैत छैक... तकरा छीनि कए लेमै पड़ैत छैक...

ब्रह्मानन्द—हमसब अपन सबटा विश्वास, सम्मान आ' अधिकार देने छलहुँ अहाँक हाथ में... [विष्णुप्रभा कें पाछाँ सँ घीचि कए सामने आनि कए ठाढ़ि कराबैत] हमसब विष्णुप्रभा कें देने छलहुँ अहाँक हाथ मे .. मुदा अहाँ तकर बदला मे देने छी अराजकताक आदेश...

विष्णुप्रभा—तैं आब एहि देश कें अराजक बनैबाक शपथ नेने छी हमसब। आब एहि देश मे राजा क्यो नहि रहत...

महेश—[अन्यान्य संगी लोकनि सँ] मुँह की देखैत छहक ? ध्वंस करह एहन अव्यवस्था कें... शेष क' दहक एहि अत्याचारक जड़ि कें...

विष्णुप्रभा—जकरा राजे करबाक योग्यता नहि, से कथीक राजा ?

ब्रह्मानन्द—मारह एहि दुःशासन कें...

[एहीमध्य हिनका सभक प्रवेशाक बादहि सँ अन्यान्य अभिनेतालोकनि धीरे-धीरे राजा आ मंत्री कें घेरि लैत छन्हि। राजा ओ मंत्री डरें एक दोसरा कें जकड़ि कए पड़ैबाक पथक सन्धान करैत छथि। महेश, ब्रह्मानन्द आ' विष्णुप्रभा अपन अपन संलाप कहैत एक-एक डेग क' कए राजा आ' मंत्रीक दिसि अगुआ अबैत छथि। और ब्रह्मानन्दक अंतिम संलापक संगहि संग सब दिसि सँ दसो गोटे दसटा लाठी ल' कए सशब्द राजा और मंत्री पर धरैत छथि आ' दर्शक हुनका दुनू कें एक मुहूर्त्तक लेल देखि नहि पबैत छथि। जखन अभिनेता लोकनि पुनः पछुआ कए अपन-अपन जगह पर आबि जाइत छथि, तखन देखल जाइत अछि जे राजा आ मंत्री चतुष्पद जीव जकाँ दर्शक वर्गक दिसि देखि रहल छथि। दुनूक मुँह पर कागजक बनायल बाघक मुखौटा शोभा दैत छन्हि। समस्त अभिनेता एहि दृश्य कं देखि कए हँसै लागैत छथि। क्यो-क्यो कहै सेहो

लागैत छथि। आ' तकर बाद, महेश-ब्रह्मानन्द-विष्णुप्रभा क संग सब क्यो समवेत स्वर मे नारा लगबै लागैत छथि— ।

ई कागज केर बाघ छथि—
बाघ छथि, बाघ छथि
हिनका सँ नहि डरू अहाँ सब,
बिनु सुइया के ताग छथि।
ई कागज केर बाघ छथि॥

सुरा - सुन्दरी - कंचन चाही
जगह-जगह अभिनन्दन चाही
गुंडा - चोर, उचक्का पोसथि
तैयो ई बे-दाग छथि

मानै क्यो नहि राजा-मन्त्री,
तैयहु धैने पाग छथि
गद्दी सँ ठेलू नीचा धए
ई नहि हम्मर भाग छथि

हिनका सँ नहि डरू अहाँ सब
ई कागज केर बाघ छथि!

—:●:—